Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 26 अंक 1 30 जनवरी, 2026 मूल्य 5 रुपये

दीन के बंधु चौ0 छोटूराम

प्रधान की कलम से

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

दीन बंधु सर छोटूराम ने भूमि को जननी मानकर किसान के शोषण के मद्देनजर कहा था "जिस खेत से म्यंसर ना हो दो जून की रोटी, उस खेत के गोसाए गंदम को जला दो"। दीन बंधु सर छोटूराम ऐसी ही प्रतिभा थे जो एक ही वक्त में भगत भी, शूर भी और दाता भी थे। खुद का जीवन कभी आसान ना था लेकिन बिना किसी जाति–पाति और धर्म के प्रतिभा पर सब न्यौछावर था। उनका जन्म एक मध्यम वर्गीय गढ़ी सांपला के चौधरी सुखीराम के घर 24 नवंबर 1881 को हुआ लेकिन कृषक समाज के मसीहा ने इसे किसान की इच्छाओं आकांक्षाओं से जोडकर बसंत पंचमी के दिन मनाने का आह्वान किया। इस दिन सरसों की फसल के फूलों की तरह किसान का तन मन भी खिल उठता है। यही उनके किसान मजदूर वर्ग के प्रति गहरे लगाव को जाहिर करता है।

सर छोटू राम का सफर इतना आसान नहीं था। एक मध्यम किसान परिवार में जन्मे बच्चे के दिल में एक साहूकार से पिता को बे–इज्जत होते देख जो भावना पैदा हुई वह प्रतिशोध नहीं कुछ कर गुजरने की ललक थी। वह छोटा सा हादसा ही उनका पथ प्रदर्शक बन गया और काश्तकार–गरीब वर्ग के मसीहा बनकर उभरे। अपनी सख्त मेहनत और बुद्धि की बदौलत सैंट स्टीफन कालेज दिल्ली से स्नात्तक की डिग्री हासिल की। संपूर्ण विद्यार्थी जीवन स्नात्तक और कानून स्नात्तक तक की डिग्री सदा प्रथम श्रेणी में हासिल कर वजीफे पर ही पूर्ण की जो उनकी बौद्धिकता का प्रतीक और प्रमाणिक है।

सर छोटू राम ने देश को सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार, भाई–भतीजावाद जैसी कुरीतयों से निजात दिलाने के लिए और करोड़ों किसान, मजदरों को आर्थिक शोषण से मुक्ति दिलाने के लिए वकालत का पेशा छोड़ राजनीति को अपना लिया। वे वर्ष 1916 में रोहतक जिले के कांग्रेस अध्यक्ष बने लेकिन केवल चार वर्षों बाद ही 1920 में कांग्रेस के असहयोग आंदोलन से अपनी असहमति जताते हुए जिला कांग्रेस अध्यक्ष पद त्याग दिया। वर्ष 1923 में सर फजले हुसैन के साथ मिलकर नैशनल युनियनिष्ट पार्टी का गठन किया। यह पार्टी किसान, मजदूर और काश्तकारों के हितों की रक्षा हेतू बनाई गई। दीनबंधु की राजनैतिक यात्रा भी अनूठी थी। वे सन 1923 में पहली बार रोहतक (दक्षिण–पूर्वी ग्रामीण क्षेत्र) से पंजाब विधानपरिषद के सदस्य बने और राजनीतिक पारी शुरू की। सन 1924 में उनको चौधरी लालचंद के स्थान पर पंजाब मंत्रीमंडल में शामिल किया गया जो उनके महापुरूष बनने की दिशा में प्रथम कदम था। पंजाब विधान सभा में गैर–कृषक सदस्यों के कड़े विरोध के बावजूद उन्होंने किसान समुदाय के हित को आगे बढ़ाना शुरू कर दिया था और यहीं से उनकी राजनीतिक प्रतिभा और सूझबूझ का चारों और सिक्का चलने लगा था। यहीं से चौ० छोटूराम का भविष्य निर्माण हुआ। उनका मुख्य लक्ष्य पंजाब के किसान को ऋणदाता के चंगुल से मुक्ति दिलाना था।

यही उनका जीवन प्रयंत ध्येय और लक्ष्य रहा। इसी वर्ष वे पंजाब विधान सभा का चुनाव जीतने पर कृषि मंत्री बने और 26 दिसंबर 1926 तक इसी पद की गरिमा को बढ़ाते हुए किसान हित के कई बिल पारित करवाए जैसा 'पंजाब कर्जा राहत अधिनियम 1934' इस अधिनियम का प्रावधान है कि अगर किसान ऋण दाता ने अपने ऋण से दोगुनी राशी अदा कर दी है तो ऋण स्वत: ही खत्म हो जायेगा। पंजाब कर्जदार सुरक्षा अधिनियम 1936 के अनुसार कर्जदार के वारिसों की भूमि हस्तांतरण पर रोक लगी तथा खड़ी फसल, वृक्षों को बेचने व कुर्की करने पर रोक लग गई। पंजाब राजस्व अधिनियम 1928, पंजाब कर्जदाता पंजीकरण अधिनियम 1938 तथा रहनशुदा जमीनों की बहाली अधिनियम 1938 भी पारित करवाए। रहनशुदा जमीनी बिल का प्रावधान था कि 20 वर्ष पूर्ण होने पर किसान की भूमि स्वत रहन मुक्त हो जाती थी। इन विधेयकों का प्रभावी क्रियान्वयन पीड़ित किसान वर्ग के लिए वरदान साबित हुआ। इनमें यह भी प्रावधान था कि किसान के मूलभूत कृषि यंत्र, साधन, बैल, हल इत्यादि की किसी भी हालत में कुर्की नहीं हो सकती थी।

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

आधुनिक भारत के विकास मंदिर के नाम से जाने वाले भाखड़ा बांध की रूप रेखा सर छोटू राम ने बना दी थी। वर्ष 1933 में पंजाब लैजिस्लेटिव कांऊसिल के प्रस्ताव के अनुसार इस परियोजना की काफी हद तक बाधाएं पार करवा दी तथा वे इसे मूर्त रूप देने में जीवन प्रयंत प्रयासरत रहे। कृषि जगत में हरित क्रांति का बीज अंकुरित करने के लिए लाहौर में एक दिन समारोह के दौरान उन्होने अपना जन्मदिवस बंसत पंचमी को मनाने के लिए कहा था क्योंकि उनका मानना था कि बसंत पंचमी किसान–काश्तकार का पर्व है और प्रकृति व कृषक समाज युग–युगांतर से एक दूसरे के पर्यायवाची हैं।

अपनी मेहनत और सरकार के थोड़े से सहारे के साथ किसान ने हरित क्रांति को फलीभूत कर दिया लेकिन उसके घर में लक्ष्मी (धन) या सरस्वती (शिक्षा) दोनों का ही अभाव है। आजादी के बाद विकास का जो मॉडल अपनाया गया उसकी सफलता और विफलता पर बौद्धिक बहस शुरू हो चुकी है। आज भारत की कुल आर्थिकता का 70 प्रतिशत करीब 48000 अरब रूपये की संपत्ति केवल 8200 बड़े अमीर घरानों के पास है और करीब 23 करोड़ की आबादी के पास केवल 30 प्रतिशत जो स्पष्ट करता है कि आर्थिक व्यवस्था चंद घरानों के पास गिरवी पड़ी है। सर छोटू राम ने किसान–मजदूर वर्ग को राहत देने के लिए कानून बनवाए थे लेकिन आज किसान पर रजिस्ट्री कानून 1882, भूमि अधिग्रहण कानून 1894 तथा भू–उपयोग वर्गीकरण कानून 1950 की भारी मार पड़ रही है। संयुक्त पंजाब में किसानों की आर्थिक मुक्ति हेतू छोटूराम ने बहुत संघर्ष किया उसमें उनको पूर्ण विजय प्राप्त हुई। पंजाब के इतिहास में अन्य कोई ऐसा आंदोलन नहीं चला जिसमें हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आदि विभिन्न मतों को मानने वाले लोगों को इतनी बड़ी संख्या में संघर्षरत कर दिया। छोटूराम बेजुबान किसान की मजबूत व प्रभावशाली आवाज बने। सन् 1937 के पंजाब विधानसभा के चुनाव में 175 में से 102 सीटें जीतने पर इन्हे सर की उपाधि से सम्मानित किया गया व जिन्नाह की पार्टी को मात्र 2 सीटें मिली थी। ऐसी महान विभूति को किसी एक जाति समुदाय से जोड़ा नहीं जा सकता। दीन बंधु अपने जीवन की अंतिम यात्रा तक कामगार, काश्तकार व किसानों के दुखों में गमगीन रहते हुए हमेशा इन कौम के दुखड़े को यह कहकर उजागर करते रहे – इस कौम का इलाही दुखड़ा किसे सुनाऊं, डर है कि इसके गम में घुट–घुट के मर ना जाऊं।

सर छोटू राम हिंदू–मुस्लिम एकता के पक्षधर थे। मुस्लिम लीग पंजाब में युनिनिस्ट पार्टी को खत्म करने के लिए प्रयास करती रही और देश विरोधी ताकतों को मजहब के नाम पर बांटने की कोशिश करती रही। वर्ष 1944 में उन्होने मुस्लिम बाहुल क्षेत्र लायलपुर अब फैसलाबाद में मुल्लाओं और डिप्टी कमीश्नर के विरोध के बावजूद एक बड़ी रैली करने में सफलता हासिल की। सर छोटू राम उस वक्त तो इसे टाल गए लेकिन राष्ट्र विरोधी ताकते एक अलग इस्लामिक देश – पाकिस्तान के गठन में कामयाब हो गई और राष्ट्र का विभाजन 1947 में हो गया। राष्ट्रभक्तों का मानना है कि अगर सर छोटू राम जिंदा रहता तो राष्ट्र का बंटवारा न होता। चौधरी साहब बहुत ही स्पष्ट शब्दों में कहते थे ''हम मौत पंसद करते हैं, विभाजन नहीं।'' वे मजहब के नाम पर बने इस इस्लामिक राज्य पाकिस्तान को बंगाल व पंजाब के हिदूंओं तथा सिक्खों के लिए अत्याचार का क्षेत्र समझते थे जिसका असली स्वरूप आज सारे राष्ट्र को नुकसान पहुंचा रहा है।

चौ. छोटू राम किसान के बेटे की शिक्षा के साथ–साथ स्त्री शिक्षा के सदैव पक्षधर रहे। उन्होंने जाट गजटीयर पत्रिका का प्रकाशन कर किसान मजदूर वर्ग के लिए शिक्षा का अभियान चलाया तथा शिक्षा के प्रसार के लिए गुरूकुल और जाट शिक्षण संस्थाओं की स्थापना करवाई। उनसे सहायता प्राप्त शिक्षा प्राप्त करने वालों में भूतपूर्व केंद्रीय मंत्री चौ० चांद राम और पाकिस्तान के एकमात्र नोबेल पुरूस्कार विजेता अब्दुस सलाम उल्लेखनीय हैं। नोबेल पुरूस्कार जीतने पर अब्दुस सलाम ने कहा था कि “अगर सर छोटूराम ना होते तो अब्दुस सलाम इस मुकाम पर ना होते।” उनका मानना था कि किसान की दशा दिशा सुधारने में किसान के बच्चों के लिए शिक्षा के साथ–साथ रोजगार नितांत

जरूरी था क्योंकि कृषि उस वक्त में लाभप्रद पेशा नहीं था। आज किसान के हालात बद से बदतर हो गए हैं।

चौ० छोटूराम का जीवन उड़ते बालू–कण और पतझड़, शोषण और पीड़ा से ग्रस्त कृषक समाज के उद्धारक के रूप में ही गुजरा क्योंकि उन्होने स्वंय यह सब कुछ भोगा तथा महसूस किया था। वे हमेशा कहते थे "नहीं चाहिए मुझे ये मखमल के मरमरे, मेरे लिए तो मिट्टी का हरम बनवा दो।" चौ० छोटूराम सदी की रक्तहीन क्रांति के सुत्रधार बने जिसके द्वारा उन्होने शोषित किसान को सेठ–साहूकारों के चुंगल से छुड़ाया। दीन बंधु सर छोटू राम महिला विकास, सुरक्षा के साथ–साथ उनकी शिक्षा व सम्मान के सदैव पक्षधर रहे। एक बार रोहतक के पास खाप पंचायतों ने मिलकर आग्रह किया कि आपके सुपत्र नहीं है इसलिए आप दूसरी शादी करवा लो तो उन्होंने उनको लताड़ते हुए कहा कि जब समस्त भारत के नर–नारी सुपत्र–सुपुत्रियां तो दूसरी शादी क्यों करवांऊ।

दीन बंधु सर छोटूराम ने अपने जीवन काल में ही बढ़ रहे प्रदूषण पर आशंका जताई थी तथा वातावरण संरक्षण हेतू सरकार को चेताया था। उन्होने उद्यमकर्ताओं को आह्वान किया था कि वे सरकार से मिलकर वातावरण संरक्षण की योजना बनाएं। जनता को भी जागरूक करने पर उन्होंने किसानों के खेत को तीन भागों में बांटने को कहा था कि एक भाग में खेती, चारों ओर वृक्षों तथा तीसरे हिस्से में पशुपालन रखने से वातावरण का संरक्षण भी होगा तथा पोषित विकास संभव होगा। वे सादा खाते, सादा पहनते थे ताकि जनता उनका अनुशरण कर निरोगी जीवन व्यतीत कर सके।

सर छोटूराम की चौमुखी प्रतिभा को हमें आज के संदर्भ में देखना–समझना है। जब तक उनकी विचारधारा युवा वर्ग में पूर्णतया जागृत नहीं होगी तब तक उनकी ग्रामीण क्रांति या महात्मा गांधी का पूर्ण स्वराज भारत में नहीं आ सकता। लेखक ने कई बार वर्तमान पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ जो कि उस समय लाहौर में स्थित था, के अंदर सर छोटूराम चेयर स्थापित करने के लिए प्रदेश सरकार व प्रशासन को पत्र लिखे हैं ताकि किसानी पर आधुनिक तकनीक के शोध हों जो किसानों की दशा सुधारने में कारगर हो सकें लेकिन अभी तक इस विषय में कुछ नहीं किया गया है।

पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ को लिखे गये पत्र का प्रारूप निम्न प्रकार से है:–

आज दीन बंधु सर छोटू राम द्वारा किसान, मजदूर वर्ग के उत्थान के लिए किए गए कार्यों को तीव्र गति से चलाए जाने की आवश्यकता है ताकि ग्राम स्वराज का लक्ष्य पूरा हो सके। महान व्यक्ति अपने समय के युग पर्वत्तक होते हैं जो कि आगामी युगों की आधारशिला रखते हैं। दीनबंधु ऐसे ही युग पुरूष थे जिन्होने हरित क्रांति का सुत्रपात कर आधुनिक चेतना के सुत्रधार बने। किसान की दुर्दशा और बर्बादी को रोकने के लिए सुखे, बाढ, बीमारी के बचाव हेतू केंद्र सरकार द्वारा किसान राष्ट्रीय सुरक्षा कोष स्थापित करने की आवश्यकता है। सर छोटू राम ने एक किसान कोष स्थापित किया था उसी का दायरा बढ़ाकर सर छोटू राम को सच्ची श्रद्धांजली दी जा सकती है। इस कोष से किसान–मजदूर और मजलूम को हर संभव मुश्किल झेलने में मदद देने के प्रावधान किए जाएं तथा किसान के हित में राष्ट्रीय स्तर पर आवाज उठाने हेतू किसान सुरक्षा संगठन की स्थापना की जानी चाहिए। इसके साथ–साथ आज कृषक–मजदूर वर्ग को सही दिशा दिखाने, शिक्षित करने, इनके उत्थान के लिए नई तजवीज व प्रगतीशील योजनाएं बनाकर उनको प्रभावी ढंग से लागू करने तथा देश में धर्म निरपेक्षता, अखंडता व प्रभुसत्ता सम्पन्नता को कायम रखने के लिए फिर से एक दीन बंधु सर छोटू राम की आवश्यकता है ताकि ग्रामीण समाज, किसान कृषक–मजदूर वर्ग के विकास का उनका स्वपन साकार हो सके। इसी प्रकार किसान की भूमि अधिग्रहण की नीति पर पुनर्विचार किए जाने की आवश्यकता है ताकि कृषि भूमि पर आधारित समस्त ग्रामीण समाज की दयनीय हो रही आर्थिक स्थिति को सुधारा जा सके।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

वीर गोकुला सिंह जाट जिनसे कांपता था औरंगजेब

– जयपाल सिंह पुनियां, एम.ए. इतिहास,
एच.एफ.एस (सेवानिवृत) (मो० 9466110050)

भारत के इतिहास में ऐसे–ऐसे योद्धा हुए हैं, जिनकी वीरता पूरे देश के लिए आदर्श हो सकती है। दुर्भाग्य यह है कि हमारी पाठ्य पुस्तकें उनके इतिहास को न केवल उपेक्षित करती हैं, बल्कि उन्होंने जिन्हें पराजित किया, ऐसे कमजोर शासकों को देश के राजा के रूप में चित्रित करती हैं। ऐसे विपरीत चित्र को बनाने में जिन्हें लज्जा नहीं आती, उन्हें प्रतिष्ठित इतिहासकार भी कहा जाता है। यहां ऐसे ही एक महान योद्धा गोकुला सिंह जाट की कहानी प्रस्तुत है। गोकुला सिंह जिसे गोकुला राम और गोकुला जाट के नाम से जाना जाता है। भारतीय इतिहास में एक महान योद्धा था। इनका जन्म 10 मई 1620 ई० में दिलपत गांव में हुआ था। इनके पिता जी मधुहागा थे। गोकुला सिंह चार भाईयों में दूसरे नम्बर पर थे। वे मथुरा के जाटों की शान थे। गोकुला सिंह जाट सत्रहवीं शताब्दी में हुए थे, जब देश पर आधुनिक इतिहासकारों के अनुसार महान मुगल साम्राज्य स्थापित था। इस महान साम्राज्य की सच्चाई यह है कि दिल्ली के बादशाह मथुरा तक में भी शासन नहीं कर पा रहा था।

सन् 1666 में मुगल बादशाह औरंगजेब के अत्याचारों से हिन्दू जनता त्राहि–त्राहि कर रही थी। मंदिरों को तोड़ा जा रहा था, हिन्दू स्त्रियों की इज्जत लूटकर उन्हें मुस्लिम बनाया जा रहा था। औरंगजेब और उसके सैनिक पागल हाथी की तरह हिन्दू जनता को रौंदते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे। हिंदुओं को दबाने के लिए औरंगजेब ने अब्दुन्नवी नामक एक कट्टर मुसलमान को मथुरा का फौजदार नियुक्त किया। अब्दुन्नवी के सैनिकों का एक दस्ता मथुरा जनपद में चारों ओर लगान वसूली करने निकला। मथुरा के पास सिनसिनी गाँव के सरदार गोकुला सिंह के आह्वान पर किसानों ने लगान देने से इनकार कर दिया, प्रतन्त्र भारत के इतिहास में वह पहला असहयोग आन्दोलन था। दिल्ली के सिंहासन के नाक तले समरवीर धर्मपरायण हिन्दू वीर योद्धा गोकुला सिंह और उनकी किसान सेना ने आततायी औरंगजेब को हिंदुत्व की ताकत का एहसास दिलाया। मई 1669 में अब्दुन्नवी ने सिहोरा गाँव पर हमला किया। उस समय वीर गोकुला सिंह गाँव में ही थे। भयंकर युद्ध हुआ लेकिन अब्दुन्नवी और उसकी सेना सिहोरा के वीर हिन्दुओं के सामने टिक ना पाई और सारे सैनिक गाजर–मूली की तरह काट दिए गए। गोकुला सिंह की सेना में जाट, राजपूत, गुर्जर, यादव, मेव, मीणा इत्यादि सभी जातियों के हिन्दू थे, सब अपनी जाति–पाति भूलकर एक हिंदू थे। इस विजय ने मृतप्राय हिन्दू समाज में नए प्राण फूंक दिए थे।

इसके बाद पाँच माह (5 महीनों) तक भयंकर युद्ध होते रहे। मुगलों की सभी तैयारियां और चुने हुए सेनापति प्रभावहीन और असफल सिद्ध हुए। क्या सैनिक और क्या सेनापति सभी के ऊपर गोकुलासिंह का वीरता और युद्ध संचालन का आतंक बैठ गया। अंत में सितंबर मास में, बिल्कुल निराश होकर, शफ शिकन खाँ ने गोकुलसिंह के पास संधि–प्रस्ताव भेजा। गोकुला सिंह ने औरंगेजब का प्रस्ताव अस्वीकार करते हुए कहा कि औरंगजेब कौन होता है हमें माफ करने वाला, माफी तो उसे हम हिन्दुओं से मांगनी चाहिए उसने अकारण ही हिन्दू धर्म का बहुत अपमान किया है।

तिलपत का युद्ध

जब औरंगजेब 28 नवम्बर 1669 को दिल्ली से चलकर खुद मथुरा आया गोकुला सिंह से लडने के लिए। औरंगजेब ने मथुरा में अपनी छावनी बनाई और अपने सेनापति होशयार खाँ को एक मजबूत एवं विशाल सेना के साथ युद्ध के लिए भेजा। आगरा शहर का फौजदार होशयार खाँ 1669 सितंबर के अंतिम सप्ताह में अपनी–अपनी सेनाओं के साथ आ पहुंचे। यह विशाल सेना चारों ओर से गोकुलसिंह को घेरा लगाते हुए आगे बढ़ने लगी। गोकुलसिंह के विरुद्ध किया गया यह अभियान, उन आक्रमणों से विशाल स्तर का था, जो बड़े–बड़े राज्यों और वहां के राजाओं के विरुद्ध होते आए थे। इस वीर के पास न तो बड़े–बड़े दुर्ग थे, न अरावली की पहाडियाँ और न ही महाराष्ट्र जैसा विविधतापूर्ण भौगोलिक प्रदेश। इन अलाभकारी स्थितियों के बावजूद, उन्होंने जिस धैर्य और रण–चातुर्य के साथ, एक शक्तिशाली साम्राज्य की केंद्रीय शक्ति का सामना करके, बराबरी के परिणाम प्राप्त किए, वह सब अभूतपूर्व है।

औरंगजेब की तोपो, धनुर्धरों, हाथियों से सुसज्जित तीन लाख लोगों की विशाल सेना और गोकुला सिंह के किसानों की बीस हजार की सेना में भयंकर युद्ध छिड़ गया। चार दिन तक भयंकर युद्ध चलता रहा और गोकुला सिंह की छोटी सी अवैतनिक सेना अपने बेढंगे और घरेलू हथियारों के

जो आपके लिए तय है वो किसी और को नहीं मिलेगा, धैर्य रखो और समय आने दो.

बल पर ही अत्याधुनिक हथियारों से सुसज्जित और प्रशिक्षित मुगल सेना पर भारी पड़ रही थी।

भारत के इतिहास में ऐसे युद्ध कम हुए हैं जहाँ कई प्रकार से बाधित और कमजोर पक्ष, इतने शांत और अडिग धैर्य के साथ लड़ा हो। हल्दी घाटी के युद्ध का निर्णय कुछ ही घंटों में हो गया था। पानीपत के तीनों युद्ध एक–एक दिन में ही समाप्त हो गए थे, परन्तु वीरवर गोकुल सिंह का युद्ध तीसरे दिन भी चला। इस लड़ाई में सिर्फ पुरुषों ने ही नहीं, बल्कि उनकी स्त्रियों ने भी पराक्रम दिखाया। चार दिन के युद्ध के बाद जब गोकुला सिंह की सेना युद्ध जीतती हुई प्रतीत हो रही थी तभी हसन अली खान के नेतृत्व में एक नई विशाल मुगलिया टुकड़ी आ गई और इस टुकड़ी के आते ही गोकुला की सेना हारने लगी। युद्ध में अपनी सेना को हारता देख हजारों नारियाँ जौहर की पवित्र अग्नि में खाक हो गई।

गोकुला सिंह और उनके ताऊ उदय सिंह को सात हजार साथियों सहित बंदी बनाकर आगरा में औरंगजेब के सामने पेश किया गया। औरंगजेब ने कहा जान की खैर चाहते हो तो इस्लाम कबूल कर लो और रसूल के बताए रास्ते पर चलो। बोलो, क्या इरादा है इस्लाम या मौत ?

अधिसंख्य धर्म–परायण हिन्दुओं ने एक सुर में कहा औरंगजेब, अगर तेरे खुदा और रसूल मोहम्मद का रास्ता वही है जिस पर तू चल रहा है तो धिक्कार है तुझे, हमें तेरे रास्ते पर नहीं चलना, इतना सुनते ही औरंगजेब के संकेत से गोकुला सिंह की बलशाली भुजा पर जल्लाद का बरछा चला। गोकुला सिंह ने एक नजर अपने भुजाविहीन रक्तरंजित कंधे पर डाली और फिर बड़े ही धमण्ड के साथ जल्लाद की ओर देखा और कहा दूसरा वार करो। दूसरा बरछा चलते ही वहाँ खड़ी जनता त्राहि–त्राहि कर उठी और फिर गोकुला सिंह के शरीर के एक–एक जोड़ काटे गए। गोकुला सिंह का सिर जब कटकर धरती माता की गोद में गिरा तो मथुरा में केशवराय जी का मंदिर भी भरभराकर गिर गया। जब गोकूला सिंह की भुजाएं और उनके अंग काटे जा रहे थे तो वहां से उनके खून फुहारे फूट पड़ती थी। जहां सार्वजनिक चबूतरे पर गोकुला जाट को काटा गया, उस चबूतरे का नाम "फुवारा चौंक" पड़ गया था। यही हाल उदय सिंह और बाकी साथियों का भी किया गया। छोटे–छोटे बच्चों को जबरन मुसलमान बना दिया गया। 1 जनवरी 1670 ईसवी का दिन था वह।

ऐसे अप्रत्याशित वीर का कोई भी इतिहास नहीं पढ़ाया गया और न ही कहीं कोई सम्मान ही दिया गया। गोकुला सिंह सिर्फ जाटों के लिए शहीद नहीं हुए थे न उनका राज्य ही किसी ने छीन लिया था, न कोई पेंशन बंद कर दी थी, बल्कि उनके सामने तो अपूर्व शक्तिशाली मुगल सत्ता, दीनतापूर्वक, सन्धि करने की तमन्ना लेकर गिड़गिड़ाई थी। केवल जाट पुरूष ही नहीं बल्कि उनकी वीरांगनायें भी अपनी ऐतिहासिक दृढ़ता और पारंपरिक शौर्य के साथ उन सेनाओं का सामना करती रही। हम ऐसे अप्रत्याशित वीर को कागज के ऊपर भी सम्मान नहीं दे सके। दुर्भाग्य की बात है कि भारत की इन वीरांगनाओं और सच्चे सपूतों का कोई उल्लेख शाही टुकड़ों पर पलने वाले तथाकथित इतिहासकारों ने नहीं किया। गोकुला सिंह जाट जैसे वीरयोद्धा को लेखक शत्–शत् नमन करता है।

गणतंत्र दिवस पर विशेष .... भारतीय गणतंत्र का अवलोकन

– बी.एस. गिल, सचिव
जाट सभा (मो० 9888004417)

आज से 167 वर्ष पहले जाटलैंड की मेरठ नगरी से हमारे पूर्वज स्वतंत्रता नायको ने 'दिल्ली चलो' का उद्घोष करके भारत को एक स्वतंत्र गणतंत्र राष्ट्र बनाने हेतु स्वतन्त्रता संग्राम लडा था। जब गाँव–गाँव से स्वतंत्रता सेनानी जुडते–जड़ते ढोल–नगाड़ो की आजादी धुन के साथ दिल्ली में लालकिले पहुंचे तो वहाँ पर बल्लभगढ नरेश नाहरसिंह ने लालकिले के प्राचीर से प्रधानमंत्री के दायित्व के रूप में अपने संबोधन में ग्रामीण आजादी के मतवालो का कहा था– "खल्क खुदाका, मुल्क बादशाह (राष्ट्रपति) का, अमल अवाम (खाप) का" जिससे उनमे आजादी का उन्माद प्रवाहित हो गया था– अपनी निर्यात का स्वयं निर्धारण करने का पवित्र संकल्प! यद्यपि हम उस समय भारतगाता को दासता से मुक्त नही कर पाये परन्तु हमने उस समय एक दृढ निश्चय किया था कि हम तब तक संघर्ष करते रहेंगे जब तक हम स्वाधीन गणतंत्र राष्ट्र न बन जाते।

भारत 1947 में आजाद हुआ तथा यह 26 जनवरी 1950 को गणतंत्र राष्ट्र बना। बापू जी ने आजाद भारत के लिये ग्रामीण स्वराज का स्वप्न लिया था। हमे गणतंत्र हुये 74 बरस बीत गये हैं, आओ उन गाँव की गलियो में चले, जहां जीवन बन रहा है या बिगड रहा है तथा जाने कि बापूजी के ग्रामीण स्वराज का सपना पूरा

कल बुरा था आज अच्छा आएगा, थोड़ी हिम्मत रखो वक्त ही तो है रुक थोड़ी ना जाएगा।

हुआ है या नही। गणतंत्र दिवस की राजधानी के राजमार्गो प रंगबिरंगी झांकियों में क्या हम यह अनुभव करते हैं कि एक सामान्य नागरिक महागणतंत्र मे सन्तुष्ट जीवन व्यतीत कर रहा है ? देश महान गणतंत्र नही बन जाता जहां कि राजधानी को गगनभूबी इमारतो के नीचे आम भारतीय अपने आपको बौना महसूस करें।

चार्ल्स मेटकाफ ने, भारतीय गांवों का उल्लेख "स्वयं पूर्ण लघुगणतन्त्रों" के रूप में किया था जो प्रायः समयहीन और परिवर्तन हीन थे। युद्धो में हार–जीत और राजवंशो के उत्थान–पतन से अप्रभावित! यह चित्र आकर्षक तो था और हमारी धनाढ्य सभ्यता का सुन्दर प्रतीक भी। वैदिक काल में सार्वजनिक के राजनीतिक, सामाजिक नथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में लोकतंत्र का सिद्धान्त सक्रिय था। आज लोकतंत्र के लिये जिस नैतिकता का आर्दश हम रख रहे हैं वह हमें पुरानी गणतंत्र व्यवस्था से लिया है और जिस "महान भारत" का हम बार बार उल्लेख करते हैं वह भी हमारी पारम्परिक गणतंत्र व्यवस्था की उपज थी। हम वर्तमान में शासको से रामराज स्थापित करने की बात सुनते हैं– "राम तो समष्टि के लिए राजसी सुख भोग त्याग बनवासी होते हैं और एक स्पष्ट सन्देश मिलता है– "हम हो समष्टि के लिए व्यष्टि बलिदानी।"

गांधी जी हो, सरदार पटेल हो या लालबहादुर शास्त्री जी हो, उन्होने अपने बेटो–पोतों के लिये कुछ नही किया और स्वयं सादा–जीवन व्यतीत करते रहे ताकि "रामराज" गणतंत्र स्वरूप स्वतंत्र भारत मे मजबूत हो जाये। यह दुखद आश्चर्य की बात है कि उन द्वारा दी गई दिशा का अनुकरण किसी भी राजनैतिक नेतृत्व ने नही किया। हमारे राजनीतिको ने गणसंध के 36 टुकडे कर दिये और ग्रामीण लघुगणतन्त्र व्यवस्था को ध्वस्त कर दिया। स्वयं पूर्ण लघुगणतंत्रो में किसान, बढ़ई, लुहार, कुम्हार, सुनार, नाई आदि सभी एक–दूसरे के सहयोगी थे– सबको काम, सबको मकान, सबको सम्मान प्राप्त था। राम समतावादी थे जिसकी भावना हमारे लघुगणतन्त्रों में विद्यमान थी और इसी विचारधारा से राजा महेन्द्र प्रताप ने रामकी भांति बनवासी बनकर विदेश में गणतन्त्र भारतकी प्रथम सरकार गठित भी की थी। राम तो 12 बरस प्रवासी रहे थे, परंतु राम की भांति राजपाठ त्यागकर राजा महेन्द्र प्रताप तो 20 साल प्रवासी रहे ताकि भारत में पुनः प्राचीन गणतन्त्र व्यवस्था समृद्ध हो। कहाँ गए वे लोग जो गांव को गतिमान रखते थे? आज गांववासी बुनकर व अन्य कारीगर शहरों की सड़को के साथ बसर कर रहे हैं– न उसके पास काम है, न मकान। यह कैसा गणतन्त्र जिसमे अमीरो की अमीरी और गरीबो की गरीबी दिनोदिन बढती जा रही है। यह तो पीड़ादायक अनुभूति रही कि लगभग सभी राजनीतिक दलो ने समाजवाद का नारा लगाया, लेकिन दाचे का मूलस्वरूप पूँजीवादी ही बनाकर रखा।

परिणास्वरूप स्वरूप कुछ परिवार शंखपति बनने की ओर अग्रसर है तथा करोडो पाईपतियों को शोषण समुद्र में धकेले रखा है। अधिकार प्राप्त वर्गो डावांडोल सामाजिक व्यवस्था उत्पन्न की है। हम तो जाति – संप्रदाय – लिंग के भेदभाव बिना समान अवसर के सिद्धान्त के समर्थक हैं। हमें क्यों 'शहर' बनाम 'गांव' के द्वन्द्व में फंसा दिया है। शहरो में सभी सुविधाएँ और गाँव प्राचीन सभ्यता के अवशेष क्यो ?

अभिजात के तीन अंग – व्यापारी, अफसर और राजनेता तीनो – एक स्थायी संतुलन स्थापित करने प्रयास के बजाय स्वयं आपस में लड़ रहे हैं। प्रत्येक अंग शेष दो अंगो से अधिक ताकतवर बनना चाहता है। इसी का परिणाम है, लगातार होने वाले अंतर अभिजात और आंतर–अभिजात संघर्ष जिसमे जनता को सिद्धांतो और कुछ विशेष प्रश्नो से प्रेरित राजनीति के नाम पर उलझा लिया जाता है। यदि अभिजात वर्ग ने कभी जनता की आँखो मे धूल झोंकी है, तो वह भारत का अभिजात इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। फलस्वरूप वे देश के आर्थिक स्रोतों के नाम अधिकाधिक हुडिया काटते गये – आर्थिक विकास के लिए बहुत कम शेष बचा, इसलिये संकट है। निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते है कि भारतीय आर्थिक संकट वस्तुतः भारतीय राजनीति का संकट है। राजनीतिक दलो, नेताओ तथा अन्य संस्थाओं ने राष्ट्रीय मूल्यो और उद्देश्यों के अनुसार काम करना बंद कर दिया है। उनकी रुचि देश की जनता का शोषण करके और विदेशी पूंजी के हाथो वर्तमान डगमगात अर्थतन्त्र की राजनीतिक विवशता बताकर स्वय को सत्ता में जमाये रखने तक सीमित है। सबको काम, सबको मकान होगा। अब एक मृगतृषणा बन कर रह गई है। इस उदेश्य की पूर्ति हेतु हमें गांव की ओर जाना होगा।

हमारा सारा–विचार तात्कालिक राजनीतिक लाभ के इर्द–गिर्द घूमता रहता है। जिन्हे सुविधाएँ प्राप्त है, वे "गरीबी उन्मूलन" अथवा "मानवतावाद" जैसे नारो के साथ शोषण करते हैं। यहां प्रजातंत्र के नामपर निरक्षर भेड़ जनता के चुने हथे निरक्षर शासक कानून बनाकर 'जनन्याय' का ढिढ़ोरा भले ही पीटे, यह स्पष्ट है, सारा प्रशासन कुछ 'सुविधाभोगियों' के लिए है। इसे भ्रष्ट प्रजातंत्र की सज्ञा दी गई है। वैसे भी प्रजातंत्र वह है जिसका तंत्र प्रजा हो, यानी कोई न हो, प्रजा शब्द अर्थहीन है। कहने के एक सामान्य भारतीय दुनिया के महानतम स्वाधीन महानतम प्रजातंत्र का स्वाधीन नागरिक है। पर बिगड़ती तंत्र व्यवस्था ने उसका भीतरी मन तोड दिया है देश महान होता है, यदि उसके सामान्य नागरिको मे जीन के प्रति एक अदम्य साहस हो, स्वाधीनता के मूल्यों के प्रति एक दृढ़ आस्था, उद्योगो से चितंन तक एक सक्रिय जागरुकता मनुष्य जीवन को पूर्ण गरिमामय मनुष्य की तरह जीने का अधिकार हो तथा जन, गण, मन सचमुच भारत भाग्यविधाता हो।

कृषि भारतीय सभ्यता की आत्मा है एवं किसान गणतन्त्र जनक। वर्तमान गणतन्त्र व्यवस्था में किसान व कृषि की उपेक्षा हो रही है। किसान किसान नहीं रहा। वह आधुनिक आर्थिक आंतकवाद की चपेट में है, वह अनिश्चित वातावरण में असुरक्षित जीवन व्यतीत कर रहा है चौ. छोटूराम युग वह एक प्रबल राजनैतिक शक्ति के रूप मे शासक बनकर उभरा था, वह उसका सुनहरा भूतकाल था, वर्तमान तो उसके लिये राजनैतिक बनवास है। उसे निर्भीक नेतृत्व न मिलने के कारण, वह आत्मबल खो बैठा है, वह बिखराव का शिकार है, इसलिए उपेक्षित है फिर भी कि किसान–ग्रामीण आंचल का नैतिक प्राणी– भारत माता का सेवक तथा उसका बेटा सजग सीमा प्रहरी बना हुआ है। जब जब किसान की अनदेखी हुई, भारत संकट मे पडा है। भारत की प्रथम पंचवर्षीय योजना मे कृषि 35 प्रतिशत व्यय किया था, परंतु दूसरी योजना यह घटाकर 15 प्रतिशत कर दिया था। फिर भारत को कटोरा उठाकर विदेश में अन्न मांगना पड़ा था। नेहरु अपनी गलती को स्वीकारा था कि उसने अन्न मांगना पडा था। बाद में नेहरु ने अपनी गलती को स्वीकारा था कि उसने कृषि तथा रक्षा पर पर्याप्त बजट का प्रावधान नहीं किया, इससे भारत भयावह स्थिति में पड़ा। इतिहास बहुत कुछ चेताता है यदि अब हम उसी प्रकार की गलती दोहरा रहे हैं हम तो हमारी गणतन्त्र व्यवस्था चरमरा जायेगी।

भारत कृषि प्रधान देश था, कृषि प्रधान है और कृषि प्रधान रहेगा। कृषि (साधन) का साधक किसान है, वही साधक भारतीय जनसंख्या का बाहुल वर्ग है, इसलिए हमारा गणतन्त्र, किसान तंत्र है। भारतीय किसान तन्त्र की सभी को शुभकामनाए।

सुभाष चन्द्र बोस

– लक्ष्मण सिंह फौगाट, (मो० 6280830760)

सुभाष चन्द्र बोस भारत के स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेता थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान उन्होंने जापान के सहयोग से आजाद हिन्द फौज का गठन कर अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष किया। "जय हिन्द", "दिल्ली चलो" और "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा" जैसे नारों से उन्होंने देशवासियों में नई चेतना जगाई। 21 अक्टूबर 1943 को उन्होंने स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार बनाई और अंडमानदृ निकोबार का नामकरण शहीद व स्वराज द्वीप किया। उनकी मृत्यु को लेकर आज भी विवाद है, पर उनका साहस, त्याग और राष्ट्रप्रेम भारतीय इतिहास में अमर है।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी सन् 1897 को ओड़िशा के कटक शहर में हिन्दू बंगाली कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम जानकीनाथ बोस और माँ का नाम प्रभावती था। जानकीनाथ बोस कटक शहर के मशहूर वकील थे। पहले वे सरकारी वकील थे मगर बाद में उन्होंने निजी प्रैक्टिस शुरू कर दी थी। उन्होंने कटक की महापालिका में लम्बे समय तक काम किया था और वे बंगाल विधानसभा के सदस्य भी रहे थे। अंग्रेज सरकार ने उन्हें रायबहादुर का खिताब दिया था। प्रभावती देवी के पिता का नाम गंगानारायण दत्त था। दत्त परिवार को कोलकाता का एक कुलीन परिवार माना जाता था। प्रभावती और जानकीनाथ बोस की कुल मिलाकर 14 सन्तानें थी जिसमें 6 बेटियाँ और 8 बेटे थे। सुभाष उनकी नौवीं सन्तान और पाँचवें बेटे थे। अपने सभी भाइयों में से सुभाष को सबसे अधिक लगाव शरद चन्द्र से था। शरदबाबू प्रभावती और जानकीनाथ के दूसरे बेटे थे। सुभाष उन्हें मेजदा कहते थे। शरदबाबू की पत्नी का नाम विभावती था।

सुभाष चन्द्र बोस ने कटक के प्रोटेस्टेण्ट स्कूल से प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त कर 1909 में रेवेनशा कॉलेजियेट स्कूल में प्रवेश लिया। कम उम्र में ही उन्होंने विवेकानन्द साहित्य का गहन अध्ययन कर लिया। 1919 में बीए (ऑनर्स) प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर कलकत्ता विश्वविद्यालय में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

पिता की इच्छा पर वे 1919 में इंग्लैंड गए और 1920 में आईसीएस परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त किया। परंतु राष्ट्रसेवा को सर्वोपरि मानते हुए उन्होंने 22 अप्रैल 1921 को आईसीएस से त्यागपत्र दे दिया और जून 1921 में स्वदेश लौट आए।

सुभाष चन्द्र बोस कोलकाता के महान स्वतंत्रता सेनानी चित्तरंजन दास से प्रेरित होकर उनके साथ कार्य करना चाहते थे। इंग्लैंड से लौटकर उन्होंने महात्मा गांधी से मुंबई में भेंट की, जिनकी सलाह पर वे कोलकाता जाकर दासबाबू से जुड़े। वे असहयोग आंदोलन में सक्रिय रहे और बाद में स्वराज पार्टी के माध्यम से कोलकाता महापालिका में प्रशासनिक सुधार किए।

जल्द ही सुभाष एक प्रमुख युवा नेता बने। उन्होंने जवाहरलाल नेहरू के साथ इंडिपेंडेंस लीग बनाई और साइमन कमीशन के विरोध का नेतृत्व किया। नेहरू रिपोर्ट के निर्माण में भी उनकी भूमिका रही। पूर्ण स्वराज की माँग पर गांधीजी से मतभेद हुए।

26 जनवरी 1931 को कोलकाता में राष्ट्रध्वज फहराने के दौरान वे घायल होकर जेल गए। भगत सिंह को न बचा पाने की घटना से सुभाष गांधी और कांग्रेस की नीतियों से गहरे असंतुष्ट हो गए, जिसने आगे चलकर उनके वैचारिक मार्ग को और उग्र बना दिया।

सुभाष चन्द्र बोस के सार्वजनिक जीवन में उन्हें कुल 11 बार कारावास झेलना पड़ा। पहली बार 16 जुलाई 1921 को उन्हें छह माह की जेल हुई। 1925 में क्रांतिकारी गोपीनाथ साहा की फाँसी के बाद अंग्रेज सरकार ने सुभाष को बिना मुकदमे के म्याँमार के माण्डले कारागृह भेज दिया, जहाँ उनकी तबीयत बिगड़ गई और उन्हें तपेदिक हो गया।

स्वास्थ्य अत्यंत खराब होने पर सरकार ने उन्हें रिहा किया और वे इलाज के लिए डलहौजी गए। 1930 में जेल में रहते हुए ही वे कोलकाता के महापौर चुने गए, जिससे सरकार को रिहा करना पड़ा। 1932 में उन्हें फिर अल्मोड़ा जेल भेजा गया, जहाँ स्वास्थ्य बिगड़ने पर चिकित्सकों की सलाह से वे इलाज हेतु यूरोप गए।

सुभाष चन्द्र बोस सन् 1933 से 1936 तक यूरोप में रहे। इस दौरान उन्होंने स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए स्वतंत्रता आंदोलन का कार्य जारी रखा। वे इटली के नेता बेनिटो मुसोलिनी से मिले, जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सहयोग का आश्वासन दिया। आयरलैंड के नेता ईमोन डी वलेरा उनके निकट मित्र बने। इसी समय ऑस्ट्रिया में कमला नेहरू के निधन पर उन्होंने जवाहरलाल नेहरू को सांत्वना दी।

यूरोप में ही सुभाष की भेंट विठ्ठलभाई पटेल से हुई और दोनों के विचार पटेल/बोस विश्लेषण के रूप में प्रसिद्ध हुए।

1934 में पिता के निधन का समाचार मिलने पर सुभाष भारत लौटे, लेकिन कोलकाता पहुँचते ही अंग्रेज सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर पुनः यूरोप भेज दिया।

सुभाष चन्द्र बोस ने 1934 में ऑस्ट्रिया में इलाज के दौरान एमिली शेंकल से विवाह किया। उनसे उनकी पुत्री अनिता बोस फाफ का जन्म हुआ।

1938 में वे हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन में अध्यक्ष बने। उनके प्रभावशाली नेतृत्व में योजना आयोग और विज्ञान परिषद की स्थापना हुई तथा चीन की सहायता हेतु चिकित्सकीय दल भेजा गया। गांधीजी से मतभेदों के कारण 1939 में उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा दिया और 3 मई 1939 को फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना की।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अंग्रेज सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर नजरबंद किया। 16 जनवरी 1941 को वे भेष बदलकर भारत से पलायन कर पेशावर, काबुल होते हुए जर्मनी पहुँचे, जहाँ से आगे के अंतरराष्ट्रीय संघर्ष की भूमिका बनी। सुभाष चन्द्र बोस ने जर्मनी में रहते हुए भारतीय स्वतंत्रता संगठन और आजाद हिन्द रेडियो की स्थापना की। 29 मई 1942 को उनकी मुलाकात एडॉल्फ हिटलर से हुई, लेकिन भारत के विषय में ठोस सहयोग न मिलने पर वे निराश हुए। इसके बाद 8 मार्च 1943 को वे जर्मन पनडुब्बी से होते हुए जापानी पनडुब्बी द्वारा पूर्वी एशिया पहुँचे।

पूर्वी एशिया में नेताजी ने रासबिहारी बोस से नेतृत्व संभाला और जापान के प्रधानमंत्री हिदेकी तोजो के सहयोग से 21 अक्टूबर 1943 को आजाद हिन्द की अंतरिम सरकार की स्थापना की। वे इसके राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और युद्धमंत्री बने। आजाद हिन्द फौज के साथ उन्होंने "दिल्ली चलो" और "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा" का नारा दिया, अंडमान–निकोबार को शहीद और स्वराज द्वीप नाम दिया तथा इम्फाल/कोहिमा अभियान का नेतृत्व किया। 6 जुलाई 1944 को आजाद हिन्द रेडियो से उन्होंने महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता कहकर संबोधित किया। यही संबोधन आगे चलकर ऐतिहासिक बन गया।
नेताजी सुभाष चन्द्र बोस त्याग, साहस और क्रांति का प्रतीक

सुभाष चन्द्र बोस भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के उन महानायकों में से हैं जिन्होंने आजादी को केवल एक विचार नहीं, बल्कि एक युद्ध के रूप में देखा। 23 जनवरी 1897 को ओडिशा के कटक नगर में जन्मे नेताजी बचपन से ही तेजस्वी, अनुशासित और राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत थे। देश उन्हें स्नेह और सम्मान से "नेताजी" कहकर पुकारता है।

नेताजी की शिक्षा कटक से शुरू होकर कोलकाता और फिर इंग्लैंड तक पहुँची। उन्होंने भारतीय सिविल सेवा (ICS) जैसी प्रतिष्ठित परीक्षा उत्तीर्ण की, परंतु अंग्रेजी शासन की सेवा करने के बजाय देश की स्वतंत्रता के लिए उस पद को त्याग दिया। यह निर्णय उनके दृढ़ चरित्र और राष्ट्रप्रेम का प्रथम बड़ा उदाहरण था।

भारत लौटने के बाद वे देशबंधु चित्तरंजन दास के संपर्क में आए और स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने लगे। महात्मा गांधी से वैचारिक मतभेद होने के बावजूद नेताजी का लक्ष्य स्पष्ट थाकृपूर्ण स्वतंत्रता। वे मानते थे कि केवल अहिंसा से नहीं, बल्कि संगठित और सशक्त संघर्ष से ही अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर मजबूर किया जा सकता है।

1938 में वे कांग्रेस के अध्यक्ष बने और हरिपुरा अधिवेशन में उन्होंने औद्योगिक विकास, योजना आयोग और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर बल दिया। बाद में कांग्रेस नेतृत्व से मतभेद के कारण उन्होंने फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना की। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अंग्रेजों की कमजोरी को अवसर मानते हुए नेताजी ने सशस्त्र संघर्ष का मार्ग चुना।

1941 में वे अंग्रेजों की नजरबंदी से साहसिक पलायन कर जर्मनी और फिर जापान पहुँचे। पूर्वी एशिया में उन्होंने आजाद हिन्द फौज का पुनर्गठन किया और 21 अक्टूबर 1943 को स्वतंत्र भारत की अंतरिम सरकार की स्थापना की। "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा" और "दिल्ली चलो" जैसे नारों ने भारतीयों में नई चेतना भर दी। आजाद हिन्द फौज ने अंडमान–निकोबार को मुक्त कराया और उन्हें शहीद द्वीप तथा स्वराज द्वीप नाम दिए।

नेताजी की मृत्यु 18 अगस्त 1945 को ताइवान में हुई विमान दुर्घटना में मानी जाती है, किंतु इस विषय पर आज भी विवाद बना हुआ है। अनेक जाँच आयोगों और रिपोर्टों के बावजूद रहस्य पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ। यही कारण है कि नेताजी का व्यक्तित्व आज भी लोगों के लिए जिज्ञासा और प्रेरणा का विषय बना हुआ है। स्वतंत्रता के बाद भी नेताजी का प्रभाव कम नहीं हुआ। आजाद हिन्द फौज के मुकदमों और 1946 के नौसैनिक विद्रोह ने अंग्रेजों को यह समझा दिया कि भारत पर शासन अब संभव नहीं है। आज भारत सरकार द्वारा 23 जनवरी को पराक्रम दिवस मनाया जाता है और देशभर में नेताजी को राष्ट्रीय नायक के रूप में सम्मान दिया जाता है।

21 अक्टूबर 1943 को उन्होंने स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार की स्थापना की और अंडेमान–निकोबार का नामकरण शहीद व स्वराज द्वीप किया। उनकी मृत्यु को लेकर आज भी विवाद है, किंतु उनका साहस, त्याग और नेतृत्व भारतीय इतिहास में अमर है।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस केवल एक व्यक्ति नहीं थे, वे साहस, त्याग और राष्ट्रप्रेम की जीवंत मिसाल थे। उनका जीवन हमें सिखाता है कि सच्ची आजादी के लिए दृढ़ संकल्प, बलिदान और निडरता आवश्यक है।

छोटूराम जयंती बसंतपंचमी पर्व मनाने की शुरुआत

– सूरजभान दहिया, (मो० 9818120950)

1937 में पंजाब में यूनियनिस्ट पार्टी यानी जमीदारा पार्टी यानी छोटूराम की पार्टी की सरकार बनीं थीं और इस सरकार के गठन के पश्चात् चौ० छोटूराम ने अपने क्रांतिकारी कानूनों को बनाने की प्रक्रिया शुरु कर दी। दो–तीन सालो में चौ० छोटूराम ने नए कानूनो के द्वारा पजाब में किसान क्रांति लादी थी, जिसके कारण पंजाब में 'किसान राज' स्थापित हो गया। दूसरा विश्वयुद्ध शुरू हो चुका था। बात 1942 की है जब देश में सांप्रदायिक दंगे फैलने लगे और बेचैनी बढ़ने लगी। उस समय पंजाब के प्रीमियर सर सिकंदर हयात खां मिस्र के फ्रंट पर सैनिको का हौसला बढ़ाने गये हुये थे और उनकी गैर हाजरी में वजीरे आजम की जिम्मेवारी चौ. छोटूराम को दी गई थी।

इस तनावपूर्ण स्थिति में पंजाब में बसन्त पंचमी के दिन का सद्भावना दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। बसन्त पंचमी के पहले सद्भावना दिवस पर लाहौर की पंजाब यूनिर्वसिटी में मुख्यअतिथि के रूप में चौ० छोटूराम को आमंत्रित किया गया। इस समारोह में चौ० छोटूराम ने अपने संबोधन में कहा "ऋतुओ में बंसत सबसे अलग है, अप्रतिम है, समयातीत है। यह काल के कपाल पर एक अति सम्मोहक तिलक है। बसन्त जब फैलता है तो सरस आवेग में पृथ्वी आकाश, जलचर नभचर सब आ जाते हैं। बसन्त घोषणा हैं, इस बात की कि कुदरत में, जीवन में, इतिहास में जहां–जहां पतझड़ है जहां–जहां प्रकृति की मार ने उसका सारा रस चूसकर जीवन जीवन को शुष्क, जीवन–हीन और बिखरा दिया है, वहां

बसन्त सुखद जीवन, भाईचारे एवं सद्भावना का प्रवाह करता है। मैं बसन्त पंचमी की इस सुखद वेला पर समस्त क्लांत, हताश, दुखी और निराश मानवता के प्रत्येक कण–कण को यह आश्वसान देना चाहता हूं कि पंजाब में अमन का माहौल बना रहे तथा सभी कौमों में सौहार्द का वातावरण बना रहे। हम पंजाब में नव प्रगतियुग लाने से कृत संकल्पित है, आप सभी को इस प्रयोजन हेतु मै सहयोगी बनाना चाहता हूं।

उन्होंने आगे कहा रखजीत कहा– "महाराजा रणजीत सिंह बसन्त त्यौहार का आयोजन करते थे तथा जनता से सम्पर्क करते थे। वे बसन्त पंचमी को समृद्धि व उल्लास का प्रतीक मानते थे। किसानों की लहराती फसलो का अनुभव करेत वे उन्हें बसन्त पंचमी की शुभ कामनाए थे।

मूलतः बसन्त पंचमी कृषि उत्सव है। हमारे आर्थिक और राजनीतिक जीवन को केन्द्र बिन्दु किसान है। इसकी उन्नति सबको दिल से चाहनी चाहिए, क्योकि यदि किसान समृद्ध हो तो सब समृद्ध है। यदि किसान का बुरा हाल है तो सबका बुरा हाल है। यदि किसान बचता है तो सब बच सकते हैं और यदि किसान बरबाद होता है तो उनकी बरबादी मे सबकी बरबादी है। वस्तुतः किसान कमाता है, गैर–किसान आराम और सुख भोगता है। किसान से रुपया बटोरा जाता है और गैर–किसान के फायदे के किए खर्च किया जाता है। किसान सबका लंगर हमेशा चलाता है, पर अपने स्त्री–बच्चे फाकेमस्त, खुद खाली पेट। मै उसे कहता हूं– ऐ किसान। अपने आपको पहचानः

"किया रिफ्ते की लज्जत से, न दिल को आशना तूने।
गुजारी उम्र मस्ती में, मिसाले नक्शेपा तूनें।।"

अब वे कुछ भावुक हो गये थे और अन्त मे किसान से पूरी सच्चाई के साथ, अलमा इकबाल के उन्होंने ये शब्द कहेः–

"मेरा रोना नही, रोना है यह सारे गुलिस्ता का।
नो गूल है, मैं खिजां हरगुल की है गोया खिंजामेरी।।"

फिर उन्होंने एक ऐलान कर दिया–

"मेरा जीवन लो किसान को समर्पित है, मेरे किसान भाई मुझे बस बंसत पंचमी पर आदर भाव का मुजहायरा करे" बस इसके पश्चात् किसानो ने छोटूराम जयंती बंसत पंचमी मानाने की शुरुआत की

पद्मश्री डा० सन्तराम देशवाल ने अपनी पुस्तक "दीनबंधु छोटूराम की जीवनी" में उल्लेख किया है कि उनकी (छोटूराम) माताजी बताती थी कि इनका जन्म बसन्त पंचमी को हुआ था। यहाँ 1944 में उनके बसन्त पंचमी समारोह की स्पीच के कुछ अंश का विवरण देना भी कुछ जरूरी हो गया है, जहां उन्होंने 20 जनवरी 1839 को किसान पर्व बसन्त पंचमी के दिन राजा नाहरसिंह के राज्यारोहण की बात की थी तथा बल्लभगढ से नरेश की यह बात दोहराई थी– "रियासत के सभी पंचायत प्रमुख जनहिताम सक्रिय हो एवं सभी अत्याचारों का सामना करे। हम धर्मनिरपेक्ष एवं गणतंत्र स्वतंत्र शासक है।"

चौ० छोटूराम ने अपने संबोधन को समापन करते हुये कहा– "हिन्दुस्तान कृषि प्रधान देश है, खेत–खलियानो में यह बसता है। इसलिये देश तरकी का रास्ता खेती से गुजरता है। हमने पंजाब में यही रास्ता पकड़ा है और आज पंजाब का किसान खुशवाली का अहसास कर रहा है। तमाम हिन्दुस्तान में भी यही रास्ता आगे चुनेंगे। मुझे यही यकीन है कि आपका सहयोग मुझे यूही बना रहेगा – जय बसन्त।

क्रान्ति की देवी तेजस्विनी धर्मवीरी

– तेजपाल सिंह 'देव' (मो० 9968309443)

वीरांगना धर्मवीरी देवी का जन्म उत्तर प्रदेश के लिसाड़ गाँव में हुआ था, जो बावन ग्राम की गठवाला खाप के अंतर्गत आता है। उनका पालन–पोषण एक ऐसे सामाजिक वातावरण में हुआ, जहाँ स्वाभिमान, साहस और सामूहिक उत्तरदायित्व को विशेष महत्व दिया जाता था। उनका विवाह देश खाप बड़ौत जिला मेरठ, उत्तर प्रदेश में हुआ।

जब धर्मवीरी देवी युवावस्था में थीं तब भारत में 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम आरम्भ हो चुका था। अंग्रेजों की ईस्ट इंडिया कम्पनी की दमनकारी नीतियों भ्रष्टाचार और अत्याचारों के विरुद्ध जनता में तीव्र असंतोष फैल चुका था। यह असंतोष एक व्यापक जनक्रांति में परिवर्तित हो गया।

अंग्रेज भारत में प्रारम्भ में व्यापारी के रूप में आए थे। सन् 1599 ई० में ब्रिटिश व्यापारियों ने भारत में व्यापार करने के उद्देश्य से ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना की। लगभग 100 वर्षों तक यह कम्पनी शान्तिपूर्वक व्यापार करती रही, किंतु धीरे–धीरे उसने राजनीतिक अधिकारों का विस्तार करना आरम्भ कर दिया।

कालान्तर में कम्पनी ने अनेक देशी राजाओं को पराजित कर अपने अधीन कर लिया और 1856 ई० तक लगभग सम्पूर्ण भारत में उसका प्रभुत्व स्थापित हो गया। कम्पनी के कर्मचारियों ने राजनीतिक सत्ता का दुरुपयोगए भ्रष्टाचार और लूट–खसोट प्रारम्भ कर दी। इससे न केवल भारतीय जनता बल्कि इंग्लैंड के

शासक वर्ग भी असंतुष्ट हो गए थे और कम्पनी के धनाढ्य अधिकारियों पर व्यंग्य करने लगे थे।

कम्पनी के कुशासन से भारतवर्ष का लगभग हर वर्ग असंतुष्ट हो चुका था। भारतीयों ने अपनी अंतरात्मा से पराधीनता को कभी स्वीकार नहीं किया। फलस्वरूप जनता में गुलामी से मुक्त होने की प्रबल इच्छा जाग उठी, जिसने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का रूप ले लिया। इस संग्राम में भारत के हर भाग के लोगों ने भाग लिया।

1857 की क्रान्ति में अनेक ऐसे वीर और गुमनाम वीरांगनाएँ थीं जिनका योगदान अत्यंत सशक्त था किंतु वे इतिहास के मुख्य पृष्ठों में स्थान नहीं पा सकीं। धर्मवीरी देवी ऐसी ही एक प्रमुख तेजस्विनी वीरांगना थीं। जिन्होंने कम्पनी सरकार की सेना को दिन में तारे दिखा दिए।

धर्मवीरी देवी के शौर्य से प्रेरित होकर कवि रामदत्त भाट ने सन् 1857 की क्रांति से जुड़े बलिदानों पर कविता रची। जिसमें धर्मवीरी देवी के अदम्य साहस और वीरता का उल्लेख मिलता है। यह कविता उनके जीवन और संघर्ष की लोकस्मृति को आज तक जीवित रखे हुए है। जिसमें धर्मवीरी देवी के शौर्य का उल्लेख मिलता है:–

एक कहानी अजब सुनो, सन् अठ्ठारह सौ सत्तावन की।
एक लड़की देशखाप में ब्याही थीए गठवाला बावन की।।
नाम था धर्मवीरी, उम्र अठ्ठाइस साल भाई।
बड़ौत तहसीली गारद के, ठारहा गोरों की तेग से गर्दन उड़ाई।।
चार गोली के घाव खाकर, फिर उसे मूर्छा आई थी।
देशखाप दादा की हवेली में, तुरन्त गई पहुँचाई थी।

क्षेत्र में व्याप्त स्वतंत्रता की ज्वाला ने धर्मवीरी देवी को भी आंदोलित कर दिया। उन्होंने केवल समर्थन तक स्वयं को सीमित नहीं रखा, बल्कि वीरांगनाओं और वीरों का एक संगठित दल तैयार किया। वे स्वयं रणक्षेत्र में उतरकर अंग्रेजी सेना के विरुद्ध लड़ीं।

लोक परंपराओं और ऐतिहासिक विवरणों के अनुसार, धर्मवीरी देवी के साहसी आक्रमणों से अंग्रेजी सेना विचलित हो उठी। कहा जाता है कि बड़ौत तहसील क्षेत्र में उन्होंने अठारह अंग्रेज सैनिकों को तलवार से मार गिराया। युद्ध के दौरान उन्हें चार गोलियाँ लगीं, जिससे वे मूर्छित हो गईं।

मूर्छित अवस्था में उन्हें तत्काल देश खाप के दादा की हवेली में पहुँचाया गयाए जहाँ उनकी सेवा–सुश्रुषा की गई। स्वस्थ होने के बाद वे पुनः स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हो गईं। अंग्रेजी सेना ने प्रतिशोध में उस हवेली को आग के हवाले कर दिया, किंतु इससे संघर्ष की भावना और अधिक प्रबल हो गई।

तेजस्विनी धर्मवीरी ने प्रत्यक्ष युद्ध में भाग लिया, संगठन और प्रतिरोध को बल दिया और स्वतंत्रता की लौ को बुझने नहीं दिया। यद्यपि उनका नाम मुख्यधारा के इतिहास में कम मिलता है, किंतु उनका योगदान 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की अविभाज्य कड़ी है। हथियार बांधे और लोहड्डा वाजिदपुर के जंगलों में अंग्रेजी सेना पर आक्रमण ठोक दिया। दुर्भाग्य की वह महान वीरांगना वहां युद्ध में बलिदान हो गई, यह उसकी अमर कहानी बन गई, वह आज भी स्वाधीनता प्रेमियों के कण–कण में जीवित है।

वीरांगना धर्मवीरी देवी का जीवन साहस, त्याग और राष्ट्रभक्ति का अनुपम उदाहरण है। उनका संघर्ष यह सिद्ध करता है कि भारत की स्वतंत्रता केवल प्रसिद्ध नेताओं के प्रयासों से नहीं, बल्कि धर्मवीरी देवी जैसी असंख्य गुमनाम स्त्रियों और पुरुषों के बलिदान से संभव हुई।

Supreme sacrifices of young girls of Assam during the Freedom Movement

- R.N.Malik, (Mob. 9911078502)

Assam was the farthest province from Ahmedabad. Yet the impact of freedom movement led by Mahatma Gandhi from 1920 to 1942 reached that province in equal measure. The young girls impressed the most by their supreme sacrifices. Gandhi Ji had visited Assam twice in 1921 and 1934 as part of his national tours to awaken the spirit of fighting against the Empire by taking part in the Non-cooperation, Civil Disobedience and Quit India Movements. Consequently, Assam province produced large number of freedom fighters but young girls stole the thunder.

They even went to the extent of establishing Mrityu Vahinis (death squads) in villages and towns.. One such Mrityu Vahini was set up in village Boregaon of Gohpur sub-division of Darang district. Members of this Vahini decided to hoist the national flag on the building of the nearest police station. 18 yrs old Kanaklata led the procession on 20th September 1942, a month after the launch of Quit India Movement by Gandhi Ji on 8th August 1942 from the Kranti Maidan Bombay. It was on this occasion that Gandhi Ji delivered the famous Do &Die speech for securing freedom When the girls

had come close to the police station, the SHO Mohan Som warned them not to proceed further failing which they would have to face bullets. But the girls did not heed the warning and proceed further. The SHO fired upon the girls. Kanaklata succumbed to the bullet injuries there and then. Immediately, the next girl Kakoti took up the flag from Kanaklata's hand and tried to proceed further. She too was fired upon and died on the spot.

Likewise, in the Dhekiajauli police station in the same sub-division and on the same day, the Mrityu Vahini decided to raise the national flag on the Dhekiajauli police station building. The Vahini with 15 volunteers proceeded towards the police station building on 20th September, 1942 with tri-colours in their hands. Police resorted to indiscriminate firing when the girls refused to heed the warning. All the fifteen girls were shot dead. This massacre was a mini-Jallianwala tragedy. The youngest girl to lay down her life was 12 yrs old Tileshwari of the nearby village. Now you can imagine how the British authorities committed atrocities through our native people. 20th September is observed annually as the Martyrs Day in the sub-division since then.

Another girl freedom fighter Rehati Lahon contracted T.B. in the jail in 1942 due to grossly poor hygienic and health care conditions prevailing in the jail during the 1932 Civil Disobedience Movement. She died few days after release from the jail. Likewise, staunch anti-opium campaigner and freedom fighter Deraki Dasi Baruah was arrested on Ist February 1932. She was pregnant and was given no medical help and she died inside the jail on 20 th April 1932. This way, Assam was as much surcharged with patriotic fervor as any other province of then India.

Gyaneshwari and her husband Ganesh Borthakur were staunch Gandhian followers and remarkable leaders of Koliohar sub-division of Naugaon district of Assam. The couple completely immersed themselves in all the three aspects of Gandhian Movement in Assam namely Civil Disobedience, boycott of foreign cloth and implementation of 6-Point Constructive Program for self sustenance. Gyaneshwari brought out all her foreign made household items and burnt these in the street to the full view of the public. This action of Gyaneshwari had immediate impact on the people of Naugaon district and they gradually started wearing Khadi clothes. She formed groups of young girls and created facilities for training of spinning, weaving, sewing and cloth making with local tools and. She also taught them to set up local cottage industries for making soap, jaggery or bee keeping etc. She spread this movement throughout the district. During the Civil Disobedience Movement of 1932, she was imprisoned for 13 months. She was the first woman of Assam to receive that much long sentence.

This is how she continued to propagate the 6-Point program of Gandhi Ji in many districts through door to door contact. She also strongly campaigned against use of narcotics. Like many other freedom fighters, she did not yearn for any job after independence and continued to spread the Gandhian program for self-reliance silently till her death in 1962 at the age of 70 years. An imposing statue of Smt. Gyaneshwari Devi has been raised in her town.

सबते भले वे मूढ जन, जिन्हें व व्यापै जगतगति।

– डॉ० धर्मचन्द्र विद्यालंकार, (मो० 9991816826)

महाभारत जैसे महाकाव्य में यही महाकाव्य लिखा हुआ है कि "निमज्जते राजनीतौ त्रपी निमज्जेत" अर्थात् राजनीति के डूबते ही सारे ही वेद शास्त्रों के उपदेश भी निस्सार ही हो जाते हैं। कारण, आखिर समस्त समाज का नैतिक और दाण्डिक नियमन तो वही किया करती है। तभी तो मनु ने "दण्डो धमर्मों विदुबुधा" कहा है या "दण्ड शास्ति सर्वा प्रजा" भी कहा है, मनुस्मृति में।

परन्तु दण्डधर को भी तो नीतिनिष्ठ और तटस्थ तथा न्यायपिन होना चाहिए। भारतवर्ष में आजकल उल्टी ही गंगा बह रही है। जो भी राजनीतिक सत्तासम्पन्न दल सर्वाधिक प्रबल पक्षपाती और अपारदर्शी है, वही भारत का भाग्यविधाता विगत दशक से बना हुआ है। कारण, सारा ही संचार–संजाल उसका ही चरणकमल–चंचरीक है। विप्रवर्ग भी तो बंदीजन बनकर उसी का गौरव–गान अनवरत और अबाध अहर्निश किया करता है। न्यायपालिका भी अब तो निष्प्रार्य हो चुकी है।

महान् मध्यमवर्ग ने भी अपनी विवेक की वर्तिका को ही साम्प्रदायिकता की अंधी आँधी से बुझा लिया है। समाचार–पत्र

अब केवल सत्ता के ही चरणदास भर बनकर रह गये हैं। स्थानीय स्तर पर तथ्यों की जाँच–पड़ताल करके रिर्पोटिंग करने वाली सत्यशोधक पत्रकारिता अब कागज के कलदारों में स्वयं को बेच चुकी है। ठकुर सुहाती कहना और दिखाना ही अब उसका दैनिक आचरण बन गया है।

सत्ता–पक्ष के सकल कलुष–कलाप पर भी पर्दा डालकर उसको उज्जवल और अवदात ही दिखाया जाता है। अब प्रश्न केवल प्रतिपक्ष से ही पूछे जा सकते हैं जैसेकि वही देश की सभी समस्याओं के प्रति उत्तरदायी हो। जबकि सत्ता के सिंहासन पर सुशोभित बगुले और बकबालिकाएँ भी उन्हें आजकल राजहंस से परमोज्जवल ही दृष्टिगोचर हो गये हैं। मध्यम वर्ग की आँखों में भी मोतियाबिन्द अब उतर आया है। बृद्धिजीवियों ने भी तो अब विमल विचार–वितर्क करना जैसे त्याग ही दिया है। कोयलों के स्थान पर अब काग्वृन्द ही बसन्तगान कर रहे हैं?

रामनाथ ठाकुर जैसे पिछडों के प्रगत पुरोधा भी तो अब अपने पितृपुरुषों के लिए श्भारत रत्नश का तमगा पाकर ही परम प्रसन्न हैं, वे भी अब सत्ता–दल के ही चतुर चारण बन बैठे हैं। तो किसान केसरी नायक भी अब उतने नेक और निस्वार्थी कहाँ रह गये हैं जो उन्होंने भी "अन्त सो पन्थ" उसी सत्ता की देहरी पर ही अपने सारे संघर्ष की इतिश्री की है। इस प्रकार से तो जयन्त भी बसन्त की इस फागुनी सत्ता की सुगंध से सुवासित समीर में बहकर चले हैं।

तभी तो विगत वर्षों दिल्ली की देहरी पर वर्षों तक भी धूप–घाम और शीत वर्षा में बैठने वाले उन कृषक केहरियों का वह सारा संघर्ष और पुरुषार्थ तथा उनको वह सहस्त्रों की संख्या में बलिदान भी जैसे आज व्यर्थ ही चला गया है। जिस जयन्त चौधरी के पितामह ने ही तो समस्त बिखरे हुए विपक्षियों को संगठित एक ही दल में करके इन्द्रप्रस्थ के स्वर्ण–सिंहासन तक कभी पहुँचाया था और आपत्ध्काल के अत्यन्त उत्पीडन से भी जनता जर्नादन को मुक्त कराया था, आज उन्हीं का पौत्र प्रवर उनके ही शाश्वत वर्गशत्रुओं के शक्ति–शिविर में सम्मिलित होकर अन्याय और अनीति को ही तो खाद–पानी दे रहा है?

जिन समाजवादियों ने समानता की स्थापना सत्ता पाने के पश्चात बडे–बडे नये–नये नारे गढे थे, आजकल उन्हीं के हरिवंश और क्षेत्रीय क्षत्रप नीतिश भी तो देश की एकल सम्पदा को औने–पौने में पूँजीपतियों के हाथों में बेचने वालों के ही सत्ता–शिविर में बैठकर अमन्द आनन्द का अनुभव कर रहे हैं।

अब न्याय और नीतिगत विचारधारा जैसे कहीं पर पानी भरने को चली गई है। स्वार्थ की स्पञ्ज ने ही तो जैसी सभी जननायकों की जनचेतना की आर्द्रता को सोख लिख है। जनता जर्नादन के प्रति उनका दुरुह दायित्व आज विलुप्त है। उनका अपना वर्ग–बोध भी जैसे विलुप्त ही है। अवसरवाद और सत्ता–सेवन ही जैसे अब उनका परम पुरुषार्थ है। नीतिनिष्ठा और न्यायप्रियता तथा राष्ट्रीयता कहीं किसी दूसरे लोक की ही वस्तुएँ अब उन्हें भासने लगी हैं।

कहाँ पहले कभी विचारधाराओं के आधार पर ही दलबन्दियों हुआ करती थी। कहाँ कामराज जैसे वरिष्ठ कांग्रेसी नेताओं ने नई पौध को आगे लाने के लिए ही मुख्यमंत्री जैसे प्रतिष्ठित पदों का भी परित्याग किया था। क्या परन्तु आजकल एक भी नायडू या नीतिश में वह नीतिनिष्ठा बची है कि वे "समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता" जैसे सिद्धान्तों को ही भी संविधान की संहिता में से बहिष्कृत कराने वालों का समर्थन सत्ता प्राप्ति के लिए नहीं लें। एक दक्षिण का कूर्म पिशाच तो पूरा राजनेता की बजाय टकाधर्मी व्यापारी ही है। उसकी नीतिनिष्ठा और सारी न्यायप्रियता केवल केन्द्र सरकार से अधिकाधिक अनुदान को ऐंठनें में ही लगी हुई है।

वैसे वह नई पौध को आगे लाने के नाम पर अपने ही एक पुत्र को मंत्री बनाकर क्षेत्रीय क्षत्रप बननाने को भी उद्यत कर ही रहा है। आन्ध्र से पृथक् हुए तेलंगाना के पूर्व प्रधान की प्यारी पुत्री तक को सुरा–सुन्दरी की बिक्री के अनर्गल आरोप में ही तो केन्द्र सरकार ने कारागार तक में भी डलवा दिया था। फिर भी उसी के कविता के पिता और भ्राता ने निष्पक्षता या निर्लेपता का बाघम्बर ओढ़कर उपराष्ट्रपति चुनाव में अप्रत्यक्ष रूप से उसी प्रबल पक्षपाती सत्तादल का ही शक्ति–संवर्धन किया है।

लोहिया और जयप्रकाश के चन्ट–चालाक चेलों ने ही तो राजनीतिक रूप से अपवित्र और अछूत समझे जाने वाले मत–पंथ की राजनीति करने वाले दल की अपनी सत्ता में भी सहभागी बनाकर उसको संवैधानिक वैधता भी तो बख्शी थी। वरना उन स्वयं सेवकों के साथ तो धर्मनिरपेक्ष दल वालों का हुक्का पानी भी बन्द था और उठना–बैठा तो बहुत दूर की ही बात थी।

परन्तु सत्ता–संप्राप्ति का स्वार्थ जो न करा दे, आजकल वही समाजवादी और दलित–पिछडावादी भी रामदास अठावाले बनकर उन्हीं विषैली बयार बहाने वालों के साथ गलबाहियाँ क्यों कर रहे हैं। महाराष्ट्र के मराठे भी तो सत्ता के स्वार्थ संभाजन से बँट–बिखरकर अब तीन तेरह ही हो गये हैं। शरद पंवार तो वैसे ही अब थके–होरे हुए बृद्ध–सिँह

हैं। परन्तु अजीत पंवार और शिन्दे जैसे परम स्वार्थी और सत्तासेवी मराठा महारथी पहले ही कलंक की कालिमा लगाकर रामादल में अपने पाप–पंक धो रहे हैं।

जिन–जिन क्षेत्रीय दलों या क्षत्रपों ने भी मत–पन्थ की राजनीति करने वाले धर्मराष्ट्रवादी दल का समर्थन कभी किया किया है, या लिया हैय केवल उस मध्यमार्गी गाँधीवादी धर्मनिरपेक्ष मन्दाकिनी स्वरूप विचारधारा को सत्ता से बहिर्गत करने के ही लिए आजकल वहीं दल परलोकगामी बन गये हैं। चौ० देवीलाल के "इंडियन नेशनल लोकदल" की अब क्या स्थिति है, वह वर्षा के बादलों की भाँति ही खण्ड़–खण्ड़ होकर ही अखण्ड कहाँ रह गया है।

बाल ठाकरे की शिवसेना तो अपना चुनाव चिन्ह और धनबल भी वैधानिक रूप से गंवा चुकी है। जो दल कभी राष्ट्रीय स्तर पर भी भाजपा और राष्ट्रीय काँग्रेस का एक वरणीय विकल्प बनने का ही तो दिवा स्वप्न संजोया करता था, आज अपने महाराष्ट्र में भी उसे अपना अस्तित्त्व बचाना भारी क्यों पड रहा है। पंजाब के भी सिख–सरदारों वाले उस अकाली–आन्दोलन की भी वही सद्गति हुई है, आज पंजाब में भी उसको कोई खाद–पानी देने वाला कहाँ रह गया है।

इस प्रकार जितने भी धर्म निरपेक्ष और जनोन्मुखी क्षेत्रीय दलों ने उसी आकाशीय जडहीन विषैली बेल को कभी अपना सहारा दिया था, अब वही जलहीन वृक्षवत् सूख चले हैं। अवसरवादिता और सिद्धान्तहीतना का प्रतिफल प्रायः यही तो हुआ करता है। अतीतकाल में भी तो महायानी बौद्ध भिक्षुओं ने इसी सनातनी या ब्राह्मणीय विचारधारा के साथ अरव आक्रमणों के समय सैद्धान्तिक ही सही, यही समझौता किया था कि हम मठों को मन्दिरों में बदलकर उनको पूजा–पाठ का कार्य ब्राह्मण–पुरोहितों को सौंप देंगें। तो वे भी तथागत बुद्ध को नास्तिक और अधार्मिक कहने की ही बजाय उसकी विष्णु के नौंवे अवतार के रूप में पूजा और अपासना भी करेंगें।

जैसे ही सत्धर्म का राज्याश्रय उच्छिन्न हुआ था, वैसे ही तो उसकी सभी शिराएँ देश और विदेश में भी सूख गई थी। जबकि भारतीय राजनीति के क्षितिज पर नवोदित राजपूत शक्ति ने भी तो अपनी उत्पत्ति की वैधता हेतु नवीन ब्राह्मण–धर्म को ही अपना राज्याश्रय प्रदान किया था। अतएव बडी–बडी कृषि–भूमियाँ भी तो मंदिरों और तीर्थों को दक्षिणास्वरूप दान की गई थी। जबकि राज्याश्रय से सर्वथा विरहित और वंचित बौद्ध–भिक्षुओं को आखिर में चीन और तिब्बत जेसे देशों में ही जाकर शरण लेनी पड़ी थी।

कहाँ एक ओर संविधान की सभी समतामूलक प्रावधानों पर प्रबल प्रहार करके उनका प्रतिकार और परिहार करने वाले लोग हैं। दूसरी ओर संविधान में सभी नागरिक अधिकारों और स्वतंत्रताओं के भी संरक्षक प्रतिपक्षी दल हैं। कहाँ उनका प्रत्याशी संविधान का संरक्षक एक निष्पक्ष और निर्विवाद न्यायाधीश था। कहाँ दूसरी ओर उसी स्वयं सेवक संघ का सत्ताधारी सदस्य था जोकि भारतीय संविधान की सभी सामाजिक न्याय और समानता की स्थापना करने वाले उन अनुच्छेदों का अत्यन्त उन्मूलन और उच्छेद भी करना चाहता है। वही अब उपराष्ट्रपति पद पर सुशोभित है।

परन्तु धन्य है ऐसे साक्षी गोपाल संसद सदस्यों को कि जिन्होंने अपनी आँखों पर रहट में बोलते हुए बैलों की ही भाँति पट्टिया बाँध रक्खी है। जिनके लिए न तो मौलिक अधिकारों का ही कोई महत्त्व है और न ही सार्वजनिक उन संस्थाानों की स्वायत्तता और स्वतंत्रतापूर्वक कार्य न कर पाने की परिस्थति का।

तभी तो किसी कवि ने यह कहा था खीझकर–

"सबसे भले वे मूढ जन जिन्हें न व्यापै जगत्गति"

आज जबकि विश्वभर में भारतीय जनतांत्रिक व्यवस्था की आलोचना अनवरत हो रही है। हमारी अर्थदशा भी तो अब ग्रहदशाग्रस्त जैसी ही चल रही है। अमेरिका के एक औघड और उद्धत राष्ट्रपति ने भारी भरकम तटकर हमारी वस्तुओं पर अपने देश में लगाकर हमारे विदेशी व्यापार की बधिया ही बिठा दी है।

उधर हम अपनी श्ययौ न तस्थौश की डांवाडोल एवं अस्थिर चित्त वाली अवसरवादी राजनय के चलते न अब तीन में ही है और न ही तेरह में ही हैं। अमेरिका की देवों की अलकापुरी से हमारे देवदुर्लभ सम्बन्ध पहले ही विच्छिन्न हो चुके हैं। दूसरी ओर भारत अब रूस और चीन का भी उतना विश्वस्त सहयोगी कहाँ रह गया है। अतएव हमारी गति तो अब साँप और छछूदर जैसी ही होने जा रही है। 'सार्क' और "दक्षेस" जैसे अपने स्थायी स्वामित्त्व और नेतृत्व वाले क्षेत्रीय देशों के संगठनों की इतिश्री हमारे विश्वगुरू बनने वाले प्रचण्डतम प्रचारक प्रधानमंत्री पहले ही उनकी इतिश्री कर चुके थे। "कौआ चला हंस की चाल अपनी भी भूला" वाली बात ही यह हुई है।

जिस देश की तीन–चौथाई जनता दीन–हीन बनकर या होकर सरकारी सदाव्रत पर पल रही हो, क्या वह देश कदापि स्वयं को सम्पन्न और स्वावलम्बी कह सकता है।

जिस देश की सकल ही तो राष्ट्रीय सम्पदा शनैः शनैः निजी धनकुबेरों के ही कर कमलों में सतत् भाव से संचित होती चला जा रही हो, क्या वह देश कभी सम्पूर्णतया विकसित माना जा सकता है।

जहाँ पर बजाय नीति–नियम के केवल सत्ताधारी दल की ही सुख–सुविधा और स्वेच्छा के लिए नियम–विधान बनाये और बदले जाते हों, वहाँ भला न्याय और निष्पक्षता अरण्य–रोदन ही नहीं करेंगें। जहाँ पर केंचुवा की ही भाँति केन्द्रीय चुनाव आयोग भी सत्ता–दल का ही चिर चेरा बनकर ही सारे नीति–नियम बनाता हो और नागरिकों को मताधिकार से भी विरहित और वंचित करता हो, क्या वह देश और उसकी सत्ता व्यवस्था कदापि जनतांत्रिक कहला सकती है।

जहाँ पर केन्द्रीय जाँच समितियाँ और धनशोधन की भी संस्थाएँ केवल प्रतिपक्षी जनजानयकों पर ही प्रतिदिन चील की ही भाँति झपट्टा मारती हों, वहाँ पर न्याय देवता भी क्या करेगा। जहाँ पर सत्ता–दल के परम पातकी लोगों को भी निष्पापता का प्रमाणपत्र अविलम्ब मिल जाता है, भला वहाँ पर भ्रष्टाचार रूपी सहस्त्रबाहु क्यों नहीं फले–फूलेगा। जहाँ पर सत्तादल ने तो भ्रष्टाचार को ही नियमबद्ध करकरे शिष्टाचार में ही बदल दिया हो, वहाँ पर भला आर्थिक शुचिता शोकमग्न नहीं होगी तो क्या करेगी। साध्य और साधनों की समरूपता का अब भला अर्थ ही क्या रह गया है।

जहाँ पर भला असत्य ने ही साक्ष्य का आवरण ओढ लिया हो और जहाँ पर अनैतिक आक्रामकता ने ही सत्यनिष्ठा का भी स्थान ग्रहण कर लिया होय वहाँ पर सत्य बेचारा सिसकेगा नहीं तो और वह क्या करेगा। अब मध्यवर्ग मृतप्रायः ही है तो बुद्धिजीवी वर्ग भी सुषुप्त और संज्ञाशून्य ही है। जब तीस–तीस लाख जनता द्वारा चुने जाने वाले सांसद भी बिन मोल ही असत्य और अनैतिकता के हाथों बिक रहे हैं तो जन सामान्य तो बेचारा किस खेत की मूली है। फिर उसको तो सरकार ने भी तो पाँच किलो राशन और छोटी सी सम्मान या पेंशन की रजत राशि देकर उसके तन और मन तथा धन सभी का अपहरण कर लिया है।

जहाँ पर पहले कभी राजनीतिक विचार–वीथियों में समाजवादी और पूँजीप्रधान अर्थनीतियों पर ही चर्चा और परिचर्चाएँ हुआ करती थी, आज वहाँ पर केवल हिन्दुओं और मुस्लिमों के मध्य में ही विवाद हुआ करते हैं। नितान्त निर्धनों के लिए कल्याणकारी राज्य की नीतियों की वार्ता अब कोई भूलकर भी कहाँ किया करता है। श्रम–सुधारों के नाम पर संगठित श्रमिकों के लगभग सभी सेवा–लाभ और सुरक्षाएँ अब लगभग समाप्त प्रायः ही हैं। सभी नीति नियम केवल राजनीतिक दलों को मोटा करोडों का ही चुनावी चन्दा देने वाले धनकुबेरों के पक्ष में ही बनाये जाते हैं?

गुजरात के वनतारा और आसाम में भी तीन हजार बीघा से लेकर तीन हजार एकड कृषि भूमि सत्तादल ने अपने धनदाताओं को ही दान कर दी हैं।

जिन आदिवासियों की जमीनें और जंगल तथा जल और खनिज सम्पदाएँ उनसे बलपूर्वक छीनकर पूँजीपतियों को ही दी जा रही हैं। जब से भूमिहीन नक्सली संगठित होकर सशस्त्र संघर्ष सतत करते हैं तो पूँजीपतियों के द्वारा पालित–पोषित सरकारी संचार संजाल भी उन्हीं को उग्रवादी और अलगावावादी तथा नक्सलवादी कहकर भी राष्ट्रद्रोही सिद्ध कर देता है। सरकार भी अपने सैन्य दल और पुलिस बल से उनके ऊपर ही तो आकाश से गोली वर्षा करके उन पर ही प्राणान्तक प्रहार प्रतिदिन कर रही है।

और यदि कोई पर्यावरणविद् विद्वान् या प्रगतिशील भी बुद्धिजीवी और लेखक उन दलित एवम् वंचित वर्गों का भी साथ लेखन के माध्यम से देता है तो उसको भी यह हमारी सांस्कृतिक राष्ट्रवादी सरकार "अर्बन नक्सल" कहकर और उन्हें भी खलनायक बनाकर वर्षों तक कारागार में बन्द कर देती है। छत्तीसगढ़ की भाजपा सरकार ने आदिवासियों के संघर्षशील सक्रिय समूहों के ही मुकाबले में एक "सलवा जुड्म" नामक स्वयं सेवी सशस्त्र संगठन भी तो खडा कर दिया था। तभी विपक्षी दलों के उपराष्ट्रपति पद के प्रत्याशी न्यायमूर्ति रेड्डी ने उसे मिलेशिया को अवैधानिक संगठन ही अपने निर्णय में बताया था। वह जनोन्मुखी और संविधान से सम्मत समुचित और समीचीन वैधानिक निर्णय भी अब उनकी पराजय का प्रमुख कारण बना है। अतएव अब तो जैसी बहे बयार हवा वैसी ही कीजै या ठकुर सुहाती कहने में भी अब भलाई है बस।

इसी प्रकार से राष्ट्रपति चुनाव में भी श्री यशवन्त सिन्हा जैसे सुयोगय प्रत्याशी के सामने हमारे हाथ उठाऊ सांसदों ने तब एक आदिवासी कहीं जाने वाली उस गूंगी गुडिया का ही चुनाव किया था जोकि बिल्किस बानों के दिपवन सामूहिक बलात्कारियों और हत्यारों की बन्धनमुक्ति के अवसर पर अपना मुखारविन्द नहीं खोला था।

तमिलनाडू के राज्यपाल श्री रवि बाबू कई वर्षों से कई कल्याणकारी जिलों को तमिलनाडू सरकार के रोके बैठे थे, तब भी हमारी राष्ट्रपति महोदया में कोई कार्यवाही कहाँ की थी क्योंकि वे सत्तादल के ही तो अभिनव अभिकर्ता बनकर

कार्यरत हैं। नये लोकसभा भवन के उद्घाटन अवसर पर भी उनको उद्घाटन के लिए आहूत कहाँ किया गया था और उसी दिन तो भारतीय महिला खिलाडियों को दिल्ली पुलिस ने भी तो जूतों से रौंदा था। तब भी हमारी राष्ट्रपति के मुख विविर से शब्द स्वर नाद कहाँ फूटा था। पहलगाँव और पुलगाँव की आतंकवादी घटनाओं की जाँच रिपोर्ट आज तक भी कहाँ आई है। जब संविधान के संरक्षक ही उसकी इतिश्री करने पर भी को तुले हैं, तब तो इस देश और समाज का ईश्वर भी रक्षक है। मध्यम वर्ग भी तो अब निमकर्तव्य विमूढ मति का ही है। वागचुक जैसे पर्यावरविद और वैज्ञानिक को भी कारकार मैडालकर वर्तमान सत्ता व्यवस्था ने पर्यावरण के प्रति अपनी प्रतिवद्धता का परिचय दे दिया है।

बुजुर्गों में हृदय वाल्व खराब होने का इलाज बिना सर्जरी से किया जा सकता है

– डॉ. एच.के. बाली

इंसान के हृदय में चार वाल्व होते हैं जो खून के बहाव को कंट्रोल करते हैं, पर कई बार ठीक तरीके से खुल व बंद नहीं हो पाते, जिसके कारण हृदय शरीर के अंगों तक पर्याप्त खून नहीं पहुंचा पाता है जोकी जानलेवा हो सकता है, इस गंभीर रोग को एओर्टिक स्टेनोसिस कहते हैं ।

एओर्टिक स्टेनोसिस से ग्रस्त पंचकूला निवासी 87 वर्षीय तारा चंद (बदला हुआ नाम) वर्ष 2024 में गंभीर स्थिति में अस्पताल पहुंचा, बचने की उम्मीद कम थी, उम्र ज्यादा होने के साथ साथ अन्य गंभीर बीमारियों के कारण हार्ट सर्जरी संभव नहीं थी । डॉ बाली ने उनके हृदय के एओर्टिक वाल्व रिप्लेसमेंट के लिए गैर–सर्जिकल प्रक्रिया टीएवीआर का उपयोग करते हुए इलाज कर दिया और आज वे हमारे बीच में स्वस्थ जीवन जी रहे हैं।

टीएवीआर – ट्रांसकेथेटर एओर्टिक वाल्व रिप्लेसमेंट के माध्यम से ठीक हो चुके 70 से 85 साल के हृदय रोगियों की उपस्थिति में इस गैर–सर्जिकल प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी देते हुए कार्डियक साइंसेज लिवासा ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स के अध्यक्ष डॉ. एच.के. बाली ने कहा यह मिनिमल इनवेसिव प्रक्रिया है और जिसके तहत बिना ओपन हार्ट सर्जरी के पुराने (खराब), क्षतिग्रस्त वाल्व को हटाए बिना एक नया वाल्व रोगग्रस्त वाल्व के अंदर रखा गया है।

टीएवीआर सफल उपचार प्रक्रिया इसलिए भी है क्यूंकी एओर्टिक स्टेनोसिस मुख्य रूप से बुजुर्ग रोगियों में ज्यादा पाया जाता है और अक्सर ये किडनी यां फेफड़े यां शुगर, आदि गंभीर बीमारियों से ग्रस्त होते हैं यां पहले ही वाल्व डलवा चुके होते है इसलिए उनमें ओपन हार्ट सर्जरी के माध्यम से सर्जिकल वाल्व डालना खतरे से खाली नहीं होता।

शुरू में, टीएवीआर केवल उन रोगियों में किया गया था जिनमे ओपन हार्ट सर्जरी से वाल्व डालना उनकी जान के लिए खतरनाक था। डॉ. बाली ने कहा कि बढ़ते अनुभव और बेहतर वाल्वों की उपलब्धता के साथ, अब एओर्टिक स्टेनोसिस से ग्रस्त बुजुर्ग रोगियों के इलाज के लिए टीएवीआर को प्राथमिकता दी जा रही है।

पिछले कुछ सालों में 50 से अधिक बजुर्गों का टीएवीआर के माध्यम से इलाज कर चुके डॉ. बाली ने कहा कि भारत में एओर्टिक स्टेनोसिस लगातार बढ़ रहा है विशेष रूप से बुजुर्ग लोगों में। 80 वर्ष से अधिक आयु के दो प्रतिशत लोगों और 90 वर्ष से अधिक आयु के चार प्रतिशत लोगों में यह पाया जाता है। ऐसी स्थितियों में टीएवीआर प्रभावी और सुरक्षित विकल्प के रूप में उभरा है जिसकी पूरी प्रक्रिया कुछ घंटों में समाप्त हो जाती है। रोगी को अगले दिन एम्बुलेटरी किया जाता है और 2 या 3 दिनों में छुट्टी दे दी जाती है।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 01.10.91) 34 B.Sc. Hons. Biotechnology. Working as Science Teacher in reputed private school. Father (late.) Agriculture Extension Officer. Mother housewife. Family settled at Rajgarh (H.P.) Preference Government job in Chandigarh, Panchkula. Avoid Gotras: Ahlawat, Rathi, Balyan. Cont.: 8627912782, 9816414984.
- SM4 Jat Girl (DOB 06.10.2003) 22/5'5" B. A. Gotras: Dhull, Siwach, Redhu. Cont.: 8708626836
- SM4 Jat Girl (DOB 26.10.96) 29/5'2" MBBS, BPS from Govt. Medical College Sonepat. DNB medicine from MAMC Agroha. Doing SR ship at GMCH Sector 32 Chandigarh. Father late Ex-serviceman & retired Inspector from Haryana Roadways. Mother ANM in NHM. Preferred MD/MS/DNB or first class officer. Family settled at Kalka, Pinjore. Avoid Gotras: Narwal, Nain, Dhanda. Cont.: 9034240791
- SM4 Divorced Jat Girl (DOB 10.02.91) 34/5'2" MBA, HR management from GJU Hisar. B. Tech. (CSE) from K.U.K. affiliated University. Previously Senior HR in I.T. Company in Noida. Package Rs. 8 LPA. Father retired SR lecturer DIET Haryana government. Family settled at Bhiwani. Avoid Gotras: Kasania, Beniwal. Cont.: 9416921521, 9205756432
- SM4 Jat Girl (DOB 23.10.95) 30/5'7" CTET level. MA. Economics, M.Com from Punjab University. HTET Teacher in Smart school in Panchkula.. Avoid Gotras: Chahal, Natwadia, Sheshma. Cont.: 9888032883
- SM4 Jat Girl (DOB 24.08.99) 26/5'4" B.Sc. from PGIMER Chandigarh. Father in Irrigation department. Mother housewife. Avoid Gotras: Lamba, Rathi, Dhillon. Cont.: 8396919195
- SM4 Jat Girl (DOB 01.08.88) 37/5'3" BCA, MCA, B.Ed. Working as IB Educator in Heritage International School Gurugram. Six years experience with Edubridge International School Mumbai and Heritage International School Gurugram. Father retired from Government job, now engaged in Real Estate business at Gurugram. Mother housewife. Family settled at Gurugram. Avoid Gotras: Gandas, Sehrawat, Lochab. Cont.: 9868835193
- SM4 Jat Girl (DOB 01.09.96) 29/5'3" M. Com. from Punjab University Chandigarh. UGC, NET Commerce qualified. Father's Jewelery business. Mother housewife. Avoid Gotras: Chahal, Dagar, Dhull. Cont.: 9896290431
- SM4 Jat Girl (DOB 10.06.95) 30/5'6" B. Sc. from Punjab University. M.Sc. Chemistry from Chandigarh University. B.Ed. Preparing for UPSC. Father ex-serviceman. Mother housewife. Family settled at Rohtak. Avoid Gotras: Dahiya, Sihag, Dhull. Cont.: 7837551914
- SM4 Jat Girl (DOB 28.09.98) 27/5'3" Bachelor of Engineering. Working as I.T. Software Developer in a reputed MNC (T.C.S.) at Indore. Avoid Gotras: Sangwan, Rathi, Nandal. Cont.: 9303068646
- SM4 Jat Girl (DOB 28.09.98) 27/5'3" Bachelor of Engineering. Working as I.T. Software Engineer in a reputed MNC (T.C.S.) at Indore. Avoid Gotras: Sangwan, Rathi, Nandal. Cont.: 9303068646
- SM4 Divorced Jat Girl (DOB 23.07.87) 38/5'3" M. A. English. B.Ed. Father retired Superintendent from Secretariat, Chandigarh. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Pahal, Dhankhar. Cont.: 9496274217, 9888496336
- SM4 Jat Girl (DOB 18.01.95) 30/5'3" B.DS. from Government Dental College Mumbai. Profession Dentist. (Own clinic). Father retired from Indian Navy. Mother housewife. Family settled at Sukhna Enclave, Mohali. Avoid Gotras: Sangwan, Punia, Legha. Cont.: 8826398004.
- SM4 Jat Girl (DOB Nov. 97) 27/5'3" M.Sc. Chemistry from Punjab University. Environment Management & Assessment Georgian College Canada. Working as Analytical Chemist at a Private Company in Toronto. Father ASI in Delhi police. Mother housewife. Avoid Gotras: Nandal, Rathi, Ghanghas, Khatri, Bajad. Cont.: 9050050072
- SM4 Jat Girl (DOB 11.08.99)26/5'7" B.Com. (Hons.) Christ University Banglore. Employed in BAIN & Company Gurugram. Salary 27 lakh per annum. Father Senior Manager in MNC at Banglore. Mother Teacher (HOD-Hindi) at Banglore. Brother B. Tech, Developer in MNC at Banglore. Preference: IIT/NIT/ Engineering Graduate/MBA/CA/Job in MNC. Avoid Gotras: Goyat, Saharan, Grewal. Cont.: 8168294936
- SM4 Jat Girl (DOB 28.02.93) 31/5feet. B. Tech. in Computer Science, Diploma in Computer Science, M. Tech. in Software Engineering. Working in reputed MNC at Chandigarh. Salary Rs. 8 LPA. Father retired Divisional Head Draftsman from Haryana government. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal, Sheoran. Cont.: 9417333298
- SM4 Jat Girl (DOB 31.01.95) 28/5'1" B.Sc., M.Sc. (Botany). UGC, NET qualified. Ph.D in Botany from P. U. Chandigarh. Employed as Assistant Professor in College at Karnal on contract basis. Selected as Assistant Professor in Government college through HPSC, joining awaited. Father retired from Defence. Mother housewife. Family settled at Ambala Cantt (Haryana). Avoid Gotras: Rathi, Kharb, Rana. Cont.: 9812238950
- SM4 JAT GIRL(D O B 10 .6 .1995)Ht 5 '6:B sc from p u chd and MSc Chemistry from chandigarh University, and B Ed preparing for UPSC family living at Rohtak father ex man and mother H.wife,Avoid gotra: Dahiya, Suhag, Dalal, Cont. No. 783755 1914
- SM4 Jat Boy (DOB 3 -7-1995) 30/ 5, 8'' B Tech (Electrical),Diploma In Mechanical(2Yrs) Job Lab Technician, Autoliv, Japanese salary 5 lacs p a. Gotta Gotra: Nandal Deswal, Malik, Cont. No.: 9034928000, 94665 25999.
- SM4 Jat Boy (DOB 06.11.98) 27/5'9" B.A, M.A ,D.Pharmacy from All India Jat Heroes Memorial College Rohtak. Job in Pharmacy Shop. Mother House wife. Avoid Gotras: Bhalout. Cont.: 9306403477
- SM4 Jat Boy (DOB 23.12.1995) 31/5'6" MBBS,MS (ENT) and Doctor in SR,PGIMS, Rohtak. Preference:- MD/MS Doctor, Group-A officer etc. Father (Ex- Director ,GOI), Mother (Professor & HOD), Brother- Ph.D(English). Avoid Gotras: Singal, Hooda. Cont.: 7082865677

- SM4 Jat Boy (DOB 10.12.99) 26/5'11" B. Tech. Computer Science from Chandigarh University. Self Business of Study Immigration at Chandigarh. Income approx. Rs. one lakh per month. Parents both in Government Job. Preference Government/well educated. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Sangwan, Dhull, Panwar. Cont.: 9501005215, 9463187897
- SM4 Jat Boy (DOB 15.11. 95) 30/6feet B. Tech, CSE. Working as Senior Manager at Navartis Hyderabad. Total experience 7.5 years. Income Rs. 50-60 lakh per year. Father retired from Air Force. Mother home maker. Family settled at Zirakpur. Preference Job oriented. Avoid Gotras: Lakra, Malik, Maan. Cont.: 7989389447
- SM4 Jat Boy (DOB 21.02. 2000) 25/6'1" B. Tech. Civil engineering from Punjab Engineering College. Gold Medalist & President Awardee (2022 Batch) Employed in Central Government PSU Officer. ('Engineers India Limited' Under Ministry of Petroleum & Natural Gas), Delhi/Gurugram. Father Assistant Sub-Inspector in Chandigarh Police. Mother home maker. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Hooda, Dahiya, Gahlawat. Cont.: 9417937113
- SM4 Jat Boy (DOB 25.08.96) 29/5'9" B. Tech, MA. Employed as officer in Government bank. Preparing for civil services. Father retired Sub-Inspector from Haryana Roadways. Mother housewife. Own house in Panchkula. Avoid Gotras: Bamel, Narwal, Punia. Cont.: 9467645319, 7696322587
- SM4 divorced Jat Boy (DOB 27.10.93) 32/5'9" Post graduate (MBA). Employed as Sub-Inspector in Punjab Police. Posted as Chowki In-charge at Lahli (Mohali). Father ASI in Chandigarh Police. Mother housewife. Avoid Gotras: Barak, Lathar, Narwal. Cont.: 9779666000, 8054575757
- SM4 Jat Boy (DOB 03.10.94) 31/5'11" B. Tech. Working as Software Engineer. Income Rs. 18 LPA. Father professor retired. Mother housewife. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Tomar, Malik Cont.: 9463742136
- SM4 Jat Boy (DOB 11.04.99) 26/6'1" B.Tech. (Mechanical). M.Sc. Management from U.K. London. Presently working in U. K. Father's on business in Bhiwani and other Districts of Haryana. Mother housewife. Family settled at Bhiwani. Preferred match of height 5'5" and above having highly qualified. Avoid Gotras: Sangwan, Bhambu, Jaglan. Cont.: 9813247771
- SM4 Jat Boy (DOB 10.12. 95) 30/5'10" B.Tech. Self employed in Chandigarh. Father retired Inspector from Chandigarh Police. Own house in Chandigarh. Avoid Gotras: Lochab, Hooda, Dhankar. Cont.: 8146991568
- SM4 Jat Boy (DOB 12.09.97) 28/5'7" B. Tech (CSE) from LPU Jalandhar. Working in I.T. Sector Hyderabad. Salary Rs. 27.30. LPA. Father Assistant Director in Khadi & Village Industry Commission at Ambala Cantt. Mother housewife. Own house in Zirakpur (Punjab). Two acre agriculture land. Avoid Gotras: Hooda, Ahlawat, Siwach. Cont.: 8360153519, 7696046215.
- SM4 Jat Boy (DOB 21.08.95) 30/5'9" B. Tech in Mechanical Engineering. Working as S.R. Associate Digital Marketing in a reputed MNC at Pune. Salary Rs. 8.5 LPA. Freelancing Business. Father retired from PGIMER Chandigarh. Mother housewife. Own house in Chandigarh. Avoid Gotras: Dabas, Sangwan, Dhankhar. Cont.: 7508929045, 9779132009.
- SM4 Divorced Jat Boy (DOB 25.02.91) 34/6 feet. Graduate from Punjab University. Own business (bookshop in Chandigarh). Own shop and own house in Chandigarh. Mother housewife. Avoid Gotras: Pahal, Malik, Sehrawat. Cont.: 9988407607
- SM4 Jat Boy (DOB 18.04.99) 26/6 feet. B. A. One year Computer Diploma from IIT Rohtak. One year Diploma in Computer from HATRON Rohtak. Father's occupation: Business. Three acre agriculture land in village. Double storey residence in Rohtak and three flats in Gurugram etc. Rental income Rs. 75000/- per month. No dowry and minimum Baraat in marriage. Cont.: 9896494202
- SM4 Jat Boy (DOB 18.01.95) 30/5'9". B. Tech. ECE. Self employed. Income Rs. 18 LPA. Father Under Secretary retired from Haryana Government. Mother housewife. Family settled at Nayagaon (Punjab). Two acre agriculture land. Avoid Gotras: Dhariwal, Rathi, Grewal. Cont.: 9888083645, 9915658166
- SM4 Jat Boy (DOB 21.08.97) 28/6ft. B. Tech. in Mechanical Engineering from MDU Rohtak. PG in Supply Chain Management Northern College Toronto. Working at Fastenal Canada in Supply Chain. Father retired Inspector from Haryana Police. Avoid Gotras: Tomar, Sindhu, Dhalan. Cont.: 9996611677, 9996634677
- SM4 Jat Boy (DOB July 97) 28/5'11" B. Tech. from IIT. Employed as Inspector in GST & Custom. Father Assistant Manager in Bank, Air Force veteran. Residential house in Kurukshetra. Avoid Gotras: Ola, Goyat, Sheoran. Cont.: 9802076149
- SM4 Jat Boy (DOB September 94) 31/ 5'9" Government job in Post office Panchkula. Avoid Gotras: Dhayal, Poonia, Phogat. Cont.: 9416270513, 9996611722
- SM4 Jat Boy (DOB May 1999) 26/5'7" B. Tech from PEC Chandigarh. Employed as Software Engineer in reputed company at Banglore with package of Rs. 60 lakh per year. Father in Government job at Chandigarh. Mother housewife. Younger brother pursuing B. Tech. Avoid Gotras: Seniwal, Budania, Jhajhra. Cont.: 9417317416
- SM4 Jat Boy (DOB 07.06.91) 33/5'6" B. Tech (IT). M. Tech, Cyber Security Macquarie University Sydney, Australia. Working as Network Engineer at HSC Gurugram (work from home). Has Canada Ontario PR-willing to move to Canada. Income 60000-PM. Family income Rs. 30-35 LPA. Father Advocate & notary. Mother PGT, Haryana Government school. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Pannu, Phor, Malik. Cont.: 9888727222, 9877885365
- SM4 Jat Boy (DOB 20.10.92) 32/5'5" Graduate. Doing private job. Father retired from Haryana government. Mother in private job. Own house at Chandigarh. Avoid Gotras: Lamba, Nandal, Ghalyan. Cont.: 7696771747
- SM4 Jat Boy (DOB 09.09.97) 27/ 6feet. B. Tech (Computer Science). M.B.A. employed as Software Engineer in Rocket Software Pune with package Rs. 22.5 LPA (work from home). Father retired Supervisor form HMT Pinjore (Haryana). Mother housewife. Own house in Pinjore. Own coaching institute at Pinjore with income of Rs. 31 lakh PA. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881

बसंत पंचमी एवं दीनबंधु छोटूराम का जन्मोत्सव की झलकियां

जो व्यक्ति समस्याओं के समाधान खोजता है, वही सफलताओं की चाबी हासिल करता है।

जाट सभा ने बसंत पंचमी एवं दीनबंधु छोटूराम का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया

चौधरी छोटूराम, पंडित लखमीचंद और सेठ छाजुराम को केंद्र सरकार दे भारत रत्नः - डॉ. महेन्द्र सिंह मलिक

पंचकुला के सैक्टर 6 में स्थित जाट भवन में बसंत पंचमी व दिनबंधु चौधरी छोटूराम के जन्म दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में जाट सभा के अध्यक्ष प्रदेश के पूर्व डीजीपी डॉ. महेन्द्र सिंह मलिक ने केंद्र सरकार से पुरजोर आग्रह करते हुए चौधरी छोटूराम, पंडित लखमीचंद और सेठ छाजुराम को भारत रत्न देने की मांग की और सभी ने एक मत से मांग का समर्थन किया। इस मौके पर हरियाणा सरकार के केबिनेट शिक्षा मंत्री श्री महिपाल ढांडा, पूर्व केंद्रीय मंत्री चौधरी बीरेंद्र सिंह, पूर्व राज्यसभा सांसद लेफ्टिने जरनल श्री डी पी वत्स, जम्मू कश्मीर के विधायक श्री विक्रम सिंह रंधावा, जम्मू कटड़ा के विधायक श्री बलदेव राज शर्मा, दिल्ली विधानसभा के पूर्व स्पीकर व मंत्री श्री योगेंद्र शास्त्री, पूर्व मंत्री श्री श्याम चौधरी, सरदार सर्वजीत सिंह जोहल, भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष श्रीमती बंतो कटारिया, सीबीएसएम निडानी की चेयरप्रश्न श्रीमती कृष्णा मलिक, जाट सभा के उपाध्यक्ष श्री राजेराम श्योराण, उपाध्यक्ष श्री जयपाल पूनियां, महासचिव श्री आर के मलिक, सचिव श्री बी एस गिल, श्री लक्ष्मण सिंह फोगाट, श्री सतीश बजाड़, श्री विमल जून, श्री नरेश दहिया, प्रेम सिंह सहित सभा के सभी सदस्य मौजूद रहे।

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)

सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़

फोन : **0172-5086180, M-9877149580**

Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला

फोन : 0172–2590870,M-9467763337

Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू M-9320693332

Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।